पहचान

राजभाषा पत्रिका

2024-25

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

विश्व हिन्दी दिवस समारोह के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

पहचान

राजभाषा पत्रिका

2024-25

दूसरा अंक

संरक्षक

एम.जे. जगदीश
कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक

बी. बालचन्द्रन
मुख्य महा प्रबंधक
(सामग्री/एम एस एस/मानव संसाधन)
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा)

सम्पादन सहयोगी

अरुण एम.वी.
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

संपर्क

मुख्य संपादक,
एचओसीएल
अंबलमुगल
एरणाकुलम,
कोची -682302
दूरभाष 04842727201/298

- केवल आंतरिक परिचालन के लिए।
- पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से एचओसीएल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सूची

प्रधान मंत्री का संदेश 5
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 6
निदेशक (वित्त) का संदेश 7
कार्यापालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी का संदेश 8
मुख्य संपादक की कलम से 9
रसायन और उर्वरक संबंधी स्थायी समिति का अध्ययन दौरा 10
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना 12
तिरुवैराणिकुलम महादेव मंदिर 15
सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले एआई शब्द 17
यात्रा विवरण - उगते सूरज का राज्य - अरुणाचल प्रदेश 19
क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, मैसूर 21
बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ अभियान का दस साल 22
राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम 23
पी जयचन्द्रन - मशहूर पार्श्व गायक 24
मंत्रालय द्वारा कोची कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण 25
गणतंत्र दिवस समारोह 2025 26
कर्मचारियों के लिए हिन्दी कंप्यूटर प्रशिक्षण 26
विश्व हिंदी दिवस 2025 30
एचओसीएल में सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन 31
संविधान की 75वीं वर्षगांठ समारोह 32
एच ओ सी एल में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा संबंधी गतिविधियां और उपलब्धियाँ 33
साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता कवयित्री - गगन गिल 38
साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता कवि - के जयकुमार 39
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024-25 का उद्घाटन समारोह 40
समानांतर सिनेमा का अग्रदूत - श्याम बेनेगल 42
अलविदा 43
वर्ष 2024 - में खेल जगत में भारत 45
भारत की शास्त्रीय भाषाएं 46
बजट शब्दावली 48

संदेश...

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

विश्व हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाला यह दिन हमें हिन्दी भाषा की सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक महत्व पर गर्व के साथ, हिन्दी के विस्तार के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस दिन के उपलक्ष्य में विदेश मंत्रालय और विश्व भर में भारतीय मिशनों एवं केंद्रों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई है।

भाषा एक सेतु की तरह है जो हमें अतीत से जोड़ती है और भविष्य की संभावनाओं की ओर ले जाती है। भाषा के जरिए ही एक समाज अपने ज्ञान, संस्कृति एवं संस्कार को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है और नए विचारों एवं नवाचारों को प्रभावी रूप से आगे लाने का माध्यम बनता है।

हम भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में सदियों से विभिन्न भाषाएं पुष्पित-पल्लवित होती रही हैं और इनका सह-अस्तित्व हमारे देश की विशेषता है। हिन्दी भाषा 'विविधता में एकता' की हमारी इस परंपरा को और सशक्त करती है।

हिन्दी की सरलता, सहजता और सुग्राह्यता ने विश्व के विभिन्न देशों में इसकी लोकप्रियता बढ़ाई है। हिन्दी साहित्य, सिनेमा समेत कला की विभिन्न विधाओं के प्रति दुनिया भर में लोगों का स्नेह निरंतर बढ़ा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी के बढ़ते उपयोग को देखना हर भारतवासी के लिए गौरवपूर्ण है।

डिजिटल युग में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एक नई गति प्राप्त हुई है। नए तकनीकी युग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन माध्यमों के बढ़ते उपयोग ने इसे विशेष रूप से युवाओं के बीच एक रुचिकर भाषा के रूप में स्थापित किया है।

मुझे विश्वास है कि विश्व हिन्दी दिवस पर हिन्दी को समृद्ध बनाने के संकल्प को दोहराकर हम आगे बढ़ेंगे। इस विश्वास के साथ एक बार पुन: सभी भाषा प्रेमियों, विदेश मंत्रालय और भारतीय मिशनों एवं केंद्रों के साथियों को विश्व हिन्दी दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 17, शक संवत् 1946
07 जनवरी, 2025

संदेश...

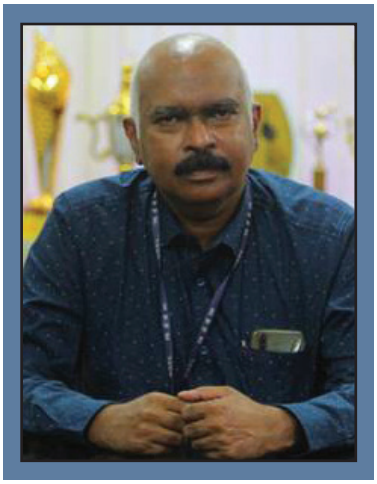

प्रिय दोस्तों/सहकर्मियों,

हम नए साल 2025 का स्वागत कर रहे हैं। हर साल नई उम्मीदों और आकांक्षाओं के साथ आ रहा है। यह हमारे लिए पिछले साल की उपलब्धियों और कमियों पर जायजा लेने और नए साल में बेहतर और उज्जवल भविष्य के लिए नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का समय है। हम सकारात्मक सोच से आगे बढ़ रहे है।

पिछला साल हमारे लिए कई मायनों में फलदायी रहा। हमारी कंपनी को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए और अधिक उत्पादन हासिल करने के लिए हम ने एक साथ काम किया। हमारा उत्पादन भी रिकार्ड स्तर पर रहा। निर्धारित लक्ष्य से अधिक हासिल करने की हमारा संकल्प इस वर्ष भी बना रहेगा। हम उत्पादन के नए स्तर को हासिल कर रहे हैं। हमारा प्लांट औसतन 140% क्षमता पर चल रहा है। हमारा वित्तीय मार्जिन भी बेहतर हुआ है और वर्ष 2025 के लिए अच्छा दिख रहा है। हमने फालतू एवं बेबुनियादी खर्चों पर नियंत्रण लाया और व्यय में आवश्यक कटौती लाकर वित्तीय स्थिरता लायी है। हमारा व्यापार माहौल प्रतिदिन प्रतिस्पर्धी हो रहा है। इस अवसर पर सुस्थिर विकास के लिए हमने ऐसी विपणन रणनीति अपनायी है, जो कंपनी की वित्तीय स्थिति को गति प्रदान करती है। हमारी बहुआयामी दृष्टि भी वर्तमान स्थिति से बढ़कर मान्यता प्राप्त कंपनी के रूप में बनाए रखने के लिए सहायक है। हमें अपनी सभी गतिविधियों में अभिनव होना होगा और लागत प्रबंधन एवं गुणवत्ता में सुधार तथा उत्पादन में इष्टतम प्राप्ति और सुरक्षा का पालन करते हुए नई ऊंचाइयों को छूना होगा।

हम सरकार की सभी गतिविधियों में खासकर स्वच्छ भारत अभियान में शामिल होकर बेहतर समाज बनाने की कोशिश कर रहे है। एक जिम्मेदार कॉरपोरेट के रूप में हम आसपास के समाज को बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करते हए उनके जीवन स्तर बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

आइए नए साल का स्वागत इस कामना के साथ करें कि नए साल का हर दिन एक बेहतर दिन हो और हम इस के लिए काम करें। हम अपने कार्य निष्पादन को ऊंचा रखने के लिए प्रतिबद्ध हो। मानवता की भलाई के लिए हम एक साथ काम करें। आपको और आपके परिवार को नववर्ष 2025 की ढेर सारी शुभकामनाएँ। वर्ष 2025 एचओसीएल के लिए उपलब्धियों से भरा वर्ष हो।

जय हिन्द, जय एचओसीएल

सजीव बी.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश...

मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि कंपनी की गृह पत्रिका 'पहचान' के वर्ष 2024-25 के दूसरे अंक का लोकार्पण हो रहा है। हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं कार्यान्वयन के लिए सदैव कार्यरत हैं। 10 जनवरी 2025 को हमारी कंपनी में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया और 05 फरवरी 2025 को हमारी कंपनी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (पीएसयू) कोची के संयुक्त हिंदी पखवाड़े समारोह 2024 का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। मुझे इसका उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला था। कंपनी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यालय एवं कार्यालय के बाहर भी कार्य कर रही है। इसके संबंध में विस्तृत रिपोर्ट इस अंक में दी गयी है।

मुझे बड़ी खुशी है कि कंपनी को वर्ष 2023-24 में राजभाषा में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार मिला है। यह राजभाषा के प्रति हमारे समर्पित कार्य का परिणाम है। हमारा मकसद है कि 'ग' क्षेत्र में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना तथा संघ की राजभाषा नीति के उत्तम कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।

आपको विदित है कि हिंदी भारत की राजभाषा है,जो भारतीय संविधान द्वारा सरकारी कामकाज में प्रयुक्त करने के लिए स्वीकृत भाषा है। हिंदी भारत की संपर्क भाषा है जो समाज के प्रयोजनों के लिए सभी लोगों द्वारा स्वीकृत भाषा है। हिंदी विदेश में भारत की पहचान है। विदेश में भारतीय आपस में हिंदी का प्रयोग अधिक करते हैं। भारत आजकल आर्थिक महाशक्ति के रूप में आगे बढ़ रही है। ऐसे वक्त में भारत की अधिकांश जनता द्वारा समझी एवं बोली जानेवाली भाषा और भारत की अस्मिता की भाषा हिंदी का नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। दुनिया आज भारत की ओर ताक रही है। यह हमारे लिए बड़े गर्व की बात है। विश्व की फलती-फूलती भाषा के रूप में हिंदी प्रतिष्ठित हो गयी है और देश में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ गयी है। हिंदी की धरोहर को मजबूत बनाए रखना है। आइए हम एक साथ इस राजभाषा को जन-जन की भाषा के रूप में समृद्ध करें।

जय हिन्द - जय हिन्दी

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला
निदेशक (वित्त)

संदेश

हिंदी वह भाषा है जो संस्कृत की समृद्ध परंपरा समाई हुई है, जो इसे एक विशिष्ट साहित्यिक और भाषाई गरिमा प्रदान करती है। हिंदी ने अपने सहज और सरल स्वरूप के कारण देश के कोने -कोने में लोगों को जोड़ दिया है और साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता तथा प्रशासन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। आधुनिक युग में डिजिटल माध्यमों के विस्तार के साथ हिन्दी की लोकप्रियता और प्रभाव भी बढ़ रहा है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने हमारी कंपनी को वर्ष 2023-24 का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसका वितरण माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय और बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मुहम्मद खान ने मैसूर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में किया था। यह गर्व की बात है कि मुझे इस पुरस्कार के साथ ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (पीएसयू) कोची का पुरस्कार भी ग्रहण करने का सौभाग्य मिल था। पुरस्कार प्राप्त होने से सभी का मनोबल बढ़ जाता है और इससे अधिक काम करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिल जाता है, साथ ही यह हमारे सामूहिक प्रयासों का सम्मान भी है। यह हमें आगे बढ़ने और बेहतर कार्य करने के लिए विशेष ऊर्जा प्रदान करता है।

हिंदी पढ़ने और लिखने के माध्यम से हम हिंदी का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं, जिसके लिए हमें चाहे कार्यस्थल हो, या फिर घर अथवा अन्य स्थान वहाँ बिना हिचकिचाहट के हिंदी में काम करना चाहिए। विविध रचनाओं से भरपूर पत्रिका 'पहचान' के वर्ष 2024-25 के दूसरे अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भले ही मातृभाषा एक सशक्त माध्यम है वैसे ही देश भर में इसकी पहुँच के लिए हिन्दी एक उत्तम माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से जो अपने विचार, अनुभव और उपलब्धियों को सांझा किया जा रहा है जिनपर सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया का इंतजार है जिससे हमारी टीम और प्रेरित होंगे। मैं इस पत्रिका के संपादकीय दल को उनके प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अंक सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

एम जे. जगदीश
कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक की कलम से

मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि कंपनी की गृह पत्रिका 'पहचान' के वर्ष 2024-25 का दूसरा अंक प्रकाशन के लिए तैयार है। आप को मालूम है कि राजभाषा कार्यान्वयन में गृह पत्रिका की अपनी अलग भूमिका होती है। 'पहचान' इस भूमिका को भली-भांति निभाती है।

इस अंक में कंपनी में आयोजित अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का विवरण, विशेष बैठकों की सूचनाएं तथा ए आई के प्रचलित शब्द और बैंकिंग से संबन्धित शब्दावली शामिल की गई है। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों की विविध प्रकार की रचनाएं और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक रचनाओं से पत्रिका समृद्ध है।

इस अंक में मलयालम के महान साहित्यकार एम टी वासुदेवन नायर पर प्रोफेसर शांती नायर द्वारा लिखित लेख है। गंभीर एवं उत्कृष्ट लेख प्रदान करने के लिए संपादकीय मण्डल की ओर से आभार व्यक्त करते है। कर्मचारियों ने पत्रिका को अधिक पठनीय एवं आकर्षक बनाने के लिए अपना योगदान दिया है। सभी को अभिनंदन एवं बधाई।

मुझे बेहद खुशी है कि राजभाषा कार्यन्वयन में उत्कृष्ट कार्य के लिए हमारी कंपनी को राजभाषा विभाग का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस उपलब्धि के लिए सभी को बधाई। बिना सीमाओं और भेद भाव के एक भाषा के रूप में हिन्दी के विकास एवं प्रचार-प्रसार में भाग लेना कर्मचारी अपना कर्तव्य समझता है। इसलिए वे बिना संकोच से अपनी भाषा के बदले हिन्दी में कुछ लिखने का प्रयास कर रहे है।

आशा है कि पत्रिका आपको पसंद आएगी। पत्रिका के आगामी अंक को अधिक रचनात्मक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय बनाने हेतु आपके सुझाव की प्रतीक्षा करते हुए इस अंक आपके सक्षम सादर समर्पित है।

बी. बालचन्द्रन
मुख्य महा प्रबन्धक (सामग्री/एमएसएस/मानव संसाधन)

रसायन और उर्वरक संबंधी स्थायी समिति का अध्ययन दौरा

अभिलाष आर.
वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी एवं मुख्य
प्रबंधक (एच आर)

रसायन और उर्वरक संबंधी संसदीय स्थायी समिति द्वारा अपने कार्यकाल 2024-25 के दौरान चयनित विषयों की जांच के संबंध में 16 से 20 जनवरी 2025 तक चेन्नई, हैदराबाद, कोच्चि, कुमराक्कम और कोलकाता का अध्ययन दौरा किया गया। समिति ने 17 से 19 जनवरी 2025 तक रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अधीन कोच्चि स्थित कार्यालयों का दौरा किया। दिनांक 18.01.2025 को एफएसीटी, अंबलमेडु स्थित अतिथि गृह में समिति ने रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अधीन उर्वरक विभाग के फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स त्रावणकोर लिमिटेड (फैक्ट), उद्योगमंडल और रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग (डीसीपीसी) और हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड (एचओसीएल), अंबलमुगल कोची के प्रतिनिधियों के साथ कंपनी के कार्यकलापों के संबंध में विस्तृत चर्चा की।

संसदीय स्थायी समिति के माननीय अध्यक्ष श्री कीर्ति आजाद झा है। समिति के सदस्य के रूप में माननीय सांसद श्री रॉबर्ट ब्रूस सी, श्री भरत सिहंजी शंकरजी डाभी, श्रीमती कृति देवी देबबर्मन, डॉ.कल्याण वैजीनाथराव काले, श्री बाबू सिंह कुशवाहा, श्री मलविंदर सिंह कंग, श्री उत्कर्ष वर्मा मधुर, श्री प्रवीण पटेल, श्री बलराम नाइक पोरिका, श्री सचिदानन्दम आर, श्री डग्गुमल्ला प्रसाद राव, श्री शिवमंगल सिंह तोमर, श्री सुभाष बराला, श्री सुभाषचन्द्र बोस पिल्ली, श्री संजय राउत और श्री मेदा रघुनाधा रेड्डी उपस्थित रहे थे। समिति की सचिव सुश्री मिरांदा इंगुदम थी और अन्य लोकसभा के अधिकारी भी उपस्थित रहे।

17 जनवरी 2025 को हैदराबाद से आयी समिति के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्यों का हार्दिक स्वागत कोची विमानपत्तन में एचओसील के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सजीव बी और एफएसीटी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस सी मुदगेरिक्कर तथा दोनों कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने किया। समिति ने 18.01.2025 को एफएसीटी, अंबलमेडु स्थित कंपनी के संयंत्र का निरीक्षण किया। उसके बाद अतिथि गृह में सम्पन्न समिति की पहली बैठक एफएसीटी के अधिकारियों के साथ थी। इसके बाद सम्पन्न एच ओ सी एल की बैठक में डीसीपीसी के संयुक्त निदेशक श्री दीपक आरोन, एचओसी के सीएमड़ी श्री सजीव बी, निदेशक (वित्त) श्री योगेंद्र प्रसाद शुक्ला, कोची इकाई के कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम जे जगदीश, मुख्य महा प्रबंधक (फायर एंड सेफ्टी /क्यूसी/टीएसएस) श्रीमती डी सिंधु, मुख्य महा प्रबंधक (सामग्री/मानव संसाधन/एमएसएस) श्री बी बालचंद्रन और श्री रमेश ओ, मुख्य प्रबंधक(मानव संसाधन/राजभाषा) ने भाग लिया। समिति ने एचओसीएल के कार्यकलापों के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की।

दोपहर के बाद समिति के सदस्य केरल के मशहूर पर्यटन केंद्र, कुमराक्कम देखने गए। वहाँ से समिति के सदस्य आलप्पुजा जहाँ रहने की व्यवस्था की गयी थी, के लिए हाउसबोट से यात्रा की। दो घंटे की यात्रा के दौरान समिति के सदस्यों के लिए केरल की सांस्कृतिक गरिमा के रूप में 'कथकली' का मंच प्रस्तुति हुई जिसका खूब आस्वादन सदस्यों ने किया। उन्होंने यात्रा में केरल की प्राकृतिक छटा का अनुभव किया और सुंदर झील में सफर किया। केरल और कुमराक्कम के बारे में हिंदी और अंग्रेजी में विस्तृत जानकारी उन्हें प्रदान की गयी। रवि अस्त होने के समय सदस्य होटल पहुंच गए। होटल में आयोजित रात्रिभोज में केरल के भोजन भी परोसे गए। 19.01.2025 को समिति के सदस्य आलप्पुजा से सड़क यात्रा कर कोची एयरपोर्ट के ताज होटल पहुंचे और दोपहर के भोजन कर कोलकत्ता के दौरा के लिए रवाना हुए। लोकसभा के अधिकारी और मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी समिति के दौरे में थे। इस अध्ययन दौरा कार्यक्रम का संयोजन कार्य एचओसीएल ने राष्ट्रीय फर्टिलाइज़र्स लिमिटेड, नोएडा के सहयोग से किया। समिति के दौरा कार्यक्रम की यात्रा योजना रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के निदेशक श्री अनिल फुलवारी ने तैयार की। समिति के अध्ययन दौरा के लिए किए गए सुगम एवं व्यवस्थित प्रबंधन के लिए समिति ने एचओसीएल की प्रशंसा और तारीफ की।

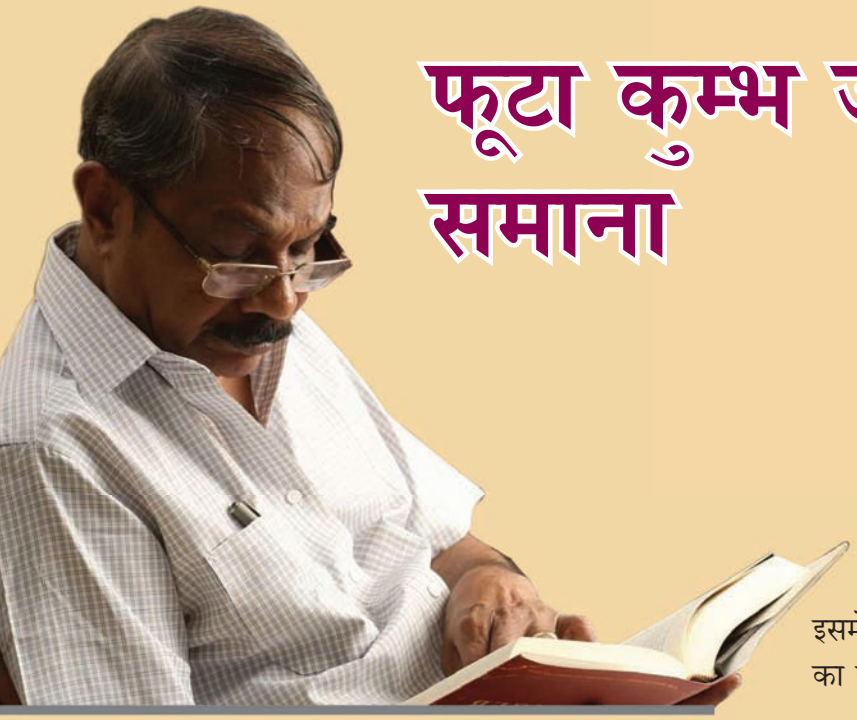

फूटा कुम्भ जल जलहि समाना

डॉ. शान्ति नायर
प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी

केरल के अपने साहित्यकार थे एम टी वासुदेवन नायर। आप आद्यान्त केरल के ही बने रहे और 25 दिसम्बर 2024 को केरल की मिट्टी में अपने आपको विलीन कर गए। केरल के समाज और संस्कृति के सूक्ष्म अन्तरालों में सतत संचार करते करते ही तिरोधान कर गए मलयालम साहित्य के ये महान कलाकार।

जिस प्रकार सूर्य की किरण सब जगह पहुँचती है सुन्दर असुन्दर किसी से परहेज़ नही करती ठीक उसी प्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी एम टी वासुदेवन नायर की लेखनी भी न कहीं रुकती है न किसी से परहेज़ करती है। सर्जनात्मकता की निरन्तरता और प्रवाह ऐसा है कि जहाँ वह अधिकाधिक साहित्यिक विधाओं का संस्पर्श करता है वहीं जीवन के ठोस और सख्त जान पडने वाले परिवेश के अन्तराणुक अवकाशों में प्रवेश कर पाने में सक्षम होता है। अपने समय में जिन लेखकों ने केरल के मलयालम भाषी पाठक समाज को अत्यधिक प्रभावित भी किया है, एम टी वासुदेवन नायर का नाम निश्चय ही उनकी अग्रिम पंक्ति में आता है। लगभग चार पीढियों ने एम टी वासुदेवन नायर को बहुत गहराई से और बहुत चाव से पढ़ा है। इस दृष्टि से एम टी वासुदेवन नायर मलयालम के विरले लेखक हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अर्थ में एम टी वासुदेवन नायर का जीवन धन्य ही माना जा सकता है।

उनके पहला प्रमुख उपन्यास नालुकेट्टु (केरल का परम्परागत घराना) है, जिसे उन्होने 23 वर्ष की आयु में लिखा था, 1958 में इस रचना को केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। अनन्तर मंञ्ज (कोहरा), कालम (समय), असुरवित्त (आसुरी बीज) और रण्डामूषम (दूसरी बारी) वारणसी जैसे उपन्यासों के माध्यम से आपने जहाँ अपनी उपन्यासकार भूमिका को प्रामाणिक सिद्ध किया वही ढाई सौ से अधिक कहानियाँ लिखकर कहानीकार के रूप भी पर्याप्त प्रशस्ति प्राप्त की हैं। एम टी वासुदेवन नायर मलयालम फिल्मों के कुशल पटकथा लेखक और निर्देशक भी हुए। उन्होंने सात फिल्मों का निर्देशन किया और लगभग 54 फिल्मों के लिए पटकथा लिखी। सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से आप नवाज़े गये। यह पुरस्कार आपको चार बार प्राप्त हुआ -ओरु वडक्कन वीरगाथा (1989), कडवु (1991), सदयम (1992), और परिणयम (1994)के लिए।

केरल प्रदेश के इस बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार को भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से 1995 में मलयालम साहित्य में उनके समग्र योगदान के लिए सम्मानित किया गया। 2005 में, भारत का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान, पद्म भूषण , उन्हें प्रदान किया गया।

एक तरह से, एम.टी. वासुदेवन नायर की रचनाओं ने पाठकों को गंभीर पढ़ने की आदत से परिचित कराया है। एम टी वासुदेवन नायर के उपन्यासों को पढ़ना पाठकों के लिए अपने आप में ही अलग अनुभव रहा है। न केवल उपन्यास, बल्कि कहानियों का भी अपना एक अलग आकर्षण है। सबसे महत्वपूर्ण पक्ष जो पाठक को अनायास खींचता है वह लेखक की भाषा शैली है। इसी के माध्यम से लेखक एक पूर्ण परिवेश का सृजन करते हैं बहुत कम गद्य लेखक हैं जिन्होंने मलयालम भाषा का इतनी खूबसूरती से इस शैली का प्रयोग किया है। 'नलुकेट्टु' 'असुरवित्त', 'कालम', रण्डामऊषम आदि उपन्यास इसके उदाहरण हैं। आकार की दृष्टि से काफी बडे होने पर भी उपन्यासों को पढ़कर समाप्त करते समय,पाठक को कहीं भी यह प्रतीति नहीं होती कि कहीं भी कोई भी शब्द या वाक्य ऐसा है जो कि अतिरिक्त या अनावश्यक है। कहानियों के सन्दर्भ में भी यह बात अधिक प्रभावी रूप से देख सकते हैं कि लेखक कभी भी एक भी शब्द या वाक्यांश का अनावश्यक प्रयोग नहीं करते।

एम टी वासुदेवन नायर के पात्र, या कुछ संवाद मौन या ठहराव उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसी बात नहीं है सब कुछ एम टी वासुदेवन नायर कहीं लिखकर ही जताते हैं। बल्कि, उस पाठक इसे अपने अनुभव के रूप में स्वतः महसूस कर लेता है। एम.टी. वासुदेवन नायर मलयालम के उन दुर्लभ लेखकों में से एक हैं जिन्होंने भाषा के अन्तरालों में मौन को अभिव्यक्ति दी और भाषा द्वारा निर्मित इस मौन को पूरे कौशल के साथ प्रयुक्त किया।

हम कह सकते हैं कि एम.टी. वासुदेवन नायर एक ऐसे लेखक बने रहेंगे जो अगली कम से कम दो पीढ़ियों को भी प्रभावित करेंगे। पांच पीढ़ियों को प्रभावित कर पाना एक लेखक के लिए दुर्लभ सौभाग्य होता है। हम जिस युग में रह रहे हैं उसमें ऐसी स्थिति आ गई है कि मनुष्य अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। इन स्थितियों को भी एम टी वासुदेवन नायर अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करते हैं।

संभवतः, अपने लेखन में एम.टी. का कौशल या बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय यह है कि उन्होंने अपने ज्ञान के दायरे में रहकर विषयों का चयन किया, उन लोगों को पात्रों के रूप में प्रयोग किया जिन्हें वे प्रत्यक्ष रूप से जानते थे। केरल की पृष्ठभूमि से हट कर तो उन्होने बहुत ही कम लिखा है। 'मञ' (कोहरा) शीर्षक उपन्यास और कुछ कहानियों को छोडकर किसी भी रचना में एक अलग पृष्ठभूमि नहीं मिलती। इन रचनाओं को भी साहिय में किए गए प्रयोग ही माना जा सकता है। लेकिन एम.टी. की सभी महत्वपूर्ण रचनाएँ केरल पृष्ठभूमि, विशेषकर मालाबार पृष्ठभूमि से लिखी गयी थीं। उनका अपना गाँव कूडल्लूर पूरी धडकन के साथ रचनाओं में उपस्थित मिलता है।

एम टी कथा साहित्य में एक और विशेषता यह है कि उसका कथा परिसर अधिक लम्बा चौडा नहीं होता। एक घटना का वर्णन करने के लिए जहाँ किसी को लम्बा इतिहास लिखने की आवश्यकता होती है वही कालम-शीर्षक उपन्यास में हम देखते हैं कि सेतु नाम का एक पात्र है और कहा जा सकता है कि उपन्यास का कथानक उस केन्द्रीय पात्र के व्यक्तिगत अनुभव और मानसिकता पर आधारित है।उसके इर्द गिर्द है। कई पात्र जो उसके निजी जीवन में आते हैं, कई परिवेशों जिनसे होकर वह यात्रा करता है ।यह एक काल्पनिक ब्रह्मांड है जिसे लेखक अपने भीतर से उत्पन्न करता है। और पाठक शीघ्र ही उस काल्पनिक ब्रह्मांड के साथ एक हो जाते हैं।

सामंतवाद का पतन, उसके कारण नायर समुदाय में पैदा हुई असुरक्षा और ऐसे परिवारों से पलायन करने की कोशिश करते युवजन एम टी वासुदेवन नायर की रचनाओं में बार बार आते हैं। जो कोई भी इसे पढ़ता है, वह स्वयं को रचना का पात्र महसूस करने लगता है अर्थात उसका साधारणीकरण शीघ्र हो जाता है। शायद ही कोई मलयाली पाठक होगा जिसने इस रचना को पढ़ा, समझा, आत्मसात या अनुभव नहीं किया होगा ,जिसमें सुमित्रा कहती है -'सेतु ने हमेशा एक ही व्यक्ति से प्रेम किया है और वह व्यक्ति स्वयं सेतु ही है'

एक ओर सामाजिक-नैतिक मूल्य एवं दूसरी ओर जन्मजात रूप से मनुष्य में पायी जाने वाली इच्छाएँ एवं आकांक्षाएँ, इन दोनों के बीच रगड़ खाता मनुष्य अक्सर अपने आपको गुनहगार महसूस करने की स्थिति में आ जाता है। जन्मजात इच्छाओं की पूर्ति के आनन्द की खोज में जाने वाला मनुष्य अनन्तर स्वयं को दोषी मानने लगता

है। उसका अपना सामाजिक एवं नैतिक बोध इस पापबोध के जन्म का कारण होता है। फिर भी जिसे उसका मन गुनाह समझता है उस ओर बढ़े बिना रह भी नहीं पाता। एम.टी. वासुदेवन नायर की रचनाओं में ऐसे अनेक पात्र आते हैं जो कि इस द्वन्द्व को झेलते दिखाई देते हैं।

एम.टी. वासुदेवन नायर ने सम्भवतः पाठक के साथ भी इतना अधिक तादात्म्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया है कि पाठक को रचना के माध्यम से अनुभव का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता नज़र आता है। मलयालम में एम.टी. के बाद आने वाले सभी कहानीकारों और एम.टी. वासुदेवन नायर के समय में रहने वाले चनाकारों में, कमोबेश एक वे ही हैं जो इस विशेषता को इस सीमा तक वहन करते हैं।

यह उनकी भाषा शैली, लेखन शैली को कथानक के चयन के दौरान दिखाई गई सावधानी का ही अंश मान सकते हैं। शब्दों और वाक्यों के प्रयोग मे एम.टी. वासुदेवन नायर ने जो सूक्ष्मता दिखाई है, वह किसी को भी आश्चर्यचकित कर सकती है।

एम टी वासुदेवन नायर एक उपन्यासकार, कहानीकार, पटकथा लेखक, संपादक, निबंधकार, नाटककार और फिल्म निर्देशक हैं। आपने गाने भी लिखे हैं। इस अर्थ में, एम टी उन दुर्लभ लोगों में से एक हैं जिन्हें बहुमुखी प्रतिभा के धनी कहा जा सकता है।

एक और बात जो चकित करती है वह है कि जिस समय एम.टी. वासुदेवन नायर लिख रहे थे, उसी समय मलयालम साहित्य में आधुनिकता आ रही थी। मलयालम के साहित्यिक परिदृश्य में परिवर्तन आ गया था। और यह भी बात थी कि बहुत कम लोग रहे जो विश्व साहित्य को उस तरह पढ़ते थे जिस तरह एम टी पढ़ते थे। पर लिखते हुए एम टी वासुदेवन नायर मलयाली ही रहे। अर्थात अपनी ज़मीन से ही जुडे रहे। वे सारे विश्व साहित्य के अच्छे अध्येता थे पर वे कहते रहे कि उन्हे अपने प्रदेश की वह निला नदी ही अधिक भाती है जिसे कि वे जानते पहचानते हैं।

एम.टी. वासुदेवन नायर एक ऐसे रचनाकार हैं जो विभिन्न प्रकार की लेखन तकनीकों में पारंगत रहे। हाल ही में, वे मार्केज़ द्वारा प्रयुक्त लेखन तकनीकों, जैसे जादुई यथार्थवाद, में भी पारंगत हैं। लेकिन उनकी किसी भी कृति में ऐसी तकनीकों का उपयोग नहीं किया गया है। एम टी वासुदेवन नायर के पास वास्तव में कहानी को सीधे ढंग से कहने का एक तरीका है। उनकी लेखन शैली बहुत सरल और सीधी है। यह लेखन शैली और कहानी का परिवेश इस प्रकार का है कि कोई भी इसे आसानी से समझ सकता है। एम टी ने इसे वहां से स्थानांतरित करने का कोई प्रयास नहीं किया है। शायद, एम टी किसी और की तुलना में इस बात पर अधिक आश्वस्त थे कि यही उनकी खासियत है। एम टी वासुदेवन नायर की पहचान भी उसी पर आधारित है।

बाल मनोविज्ञान की सच्ची परख एम.टी. वासुदेवन नायर को थी । केरल में उस समय की सामाजिक व्यवस्था में अनेक विरोधाभास और विडम्बनाएँ नजर आती थीं उन्हे कहीं भी लेखक अनदेखा न कर पाए। टूटते प्रेम-सम्बन्ध और अपमानित एवं पीड़ित होती स्त्रियाँ अक्सर ही एम.टी. वासुदेवन नायर के कथा साहित्य के केन्द्र में रही है। दाम्पत्य जीवन में आने वाले बिखराव भी एम.टी. वासुदेवन नायर की कहानियों में देखने को मिलते हैं।किसी विवशता के फलस्वरूप मात्र विवाह सूत्र में बंधकर दाम्पत्य जीवन को दयनीय रूप में जीने वाले पात्रों से लेकर, यहाँ तक कि प्रेम के दाम्पत्य में धोखेबाजी की तिक्तता को भोगने वाले आनेक पात्र आपके कैन्वास पर मिल जाते हैं।

फ़िल्मों के क्षेत्र में भी एम टी वासुदेवन नायर का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एक तरह से उनकी फिल्में उनकी कहानियों का विस्तार हैं। एम टी वासुदेवन नायर ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने कभी व्यावसायिक फिल्म के फार्मूले पर आधारित फिल्म लिखी हो। इसके दर्शक अभी भी मौजूद थे। फ़िल्में पंचाग्नि, अलोन इनअ क्राउड और सदयम, 'वडक्कन वीर गाथा' 'निर्माल्यम' और अनेक फ़िल्में हैं अत्यधिक चर्चा में आईं।

कहना न होगा कि एम टी वासुदेवन नायर वह प्रतिभा हैं जिन्होंने केरल की पृष्ठभूमि में लिखे मलयालम साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान दी । निसन्देह यह कहना अनुचित न होगा कि एम टी वासुदेवन नायर की रचनाओं में केरल के जन जीवन और मन की धडकन है।

तिरुवैराणिकुलम महादेव मंदिर

उषा पी.आर.
सहायक प्रबन्धक (एच आर)

केरल के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है तिरुवैराणिकुलम महादेव मंदिर। यह शिव पार्वती मंदिर केरल के एरणाकुलम जिले में कालडी के पास वेल्लारपल्ली में स्थित है। कालडी भारत के महान हिंदू दार्शनिक एवं अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक आदि शंकराचार्य का जन्म स्थान है। यह मंदिर कोची अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से 12 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस मंदिर की विशिष्टता यह है कि यहाँ शिव और पार्वती की मूर्तियां विपरीत दिशाओं में हैं, जो असामान्य है। मंदिर में मुख्य देवता शिव हैं, जो पूर्व की ओर विराजमान हैं, जबकि पार्वती पश्चिम की ओर विराजमान हैं। जहां भगवान शिव का मंदिर वर्ष भर खुला रहता है, वहीं पार्वती का मंदिर वर्ष में केवल 12 दिनों के लिए ही खुलता है। श्री पार्वती देवी, सती देवी, भद्राकाली तीनों देवियों को एक ही मंदिर के आँगन में पूजा करनेवाला केरल का एकमात्र मंदिर की विशेषता इसको प्राप्त है।

ऐसा लगता है कि वास्तव में यहाँ शिव मंदिर नहीं था बल्कि इरिन्जालक्कुडा के पास इरानीकुलम नामक स्थान पर था। श्रीमूलनगरम के एक बुजुर्ग नम्बूदिरी, जो भगवान शिव के भक्त थे, प्रतिदिन नदी पार करके लंबी दूरी तक पैदल चलकर भगवान शिव की पूजा करने आते थे। चात्तन नामक एक नाविक था, जो एक पत्थर की नाव रखता था और नम्बूदिरी को नदी पार करने में मदद करता था। (अकवूर चात्तन उन महान लोगों में से एक थे जिन्हें परयी पेटटा पंथिरू कुलम कहा जाता था)। जब नम्बूदिरी बहुत बूढ़े हो गए, तो एक दिन उन्होंने भगवान शिव के सामने रोते हुए कहा, 'हे

भगवान, यह मेरी अंतिम यात्रा है। आगे मैं आपके दर्शन एवं पूजा के लिए आ नहीं सकता। मैं अशक्त हूँ। उस दिन घर लौटते समय नम्बूदिरी को लगा कि उनका ओलक्कुडा (ताड़ के पत्ते से बना एक छाता) जब उठाया, बहुत भारी हो गया है। लेकिन जैसे ही वह नदी पार करके नीचे उतरा, ओलक्कुडा (छाता) बहुत हल्का हो गया। चात्तन नामक नाविक ने नम्बूदिरी को बताया कि भगवान शिव उसके साथ ओलक्कुडा में आये थे और जैसे ही वह नीचे उतरा, उन्होंने गांव में कहीं स्थान ग्रहण कर लिया। अगले दिन एक महिला घास काट रही थी, तभी अचानक उनकी चाकू पत्थर से टक्कर मार दिया और पत्थर से खून बहने लगा। वह महिला बहुत डर गई और करीब तीन किलोमीटर तक भागती रही और गिर गयी।

चात्तन ने सबको बताया कि उसने पत्थर से टक्कर मार दिया था,वह ईरानीकुलम के भगवान शिव थे। वहां भगवान शिव के लिए एक मंदिर बनाया गया और इसे तिरुवैरानिक्कुलम कहा गया। उन्होंने देवी पार्वती के लिए एक मंदिर भी बनवाया। जिस स्थान पर घास काटने वाली महिला गिरी थी उसे आज वरनाट्टूमठम कहा जाता है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष इस्क्की पूजा नामक एक विशेष पूजा आयोजित की जाती है। पूजा के बाद प्रसाद के रूप में मुरमुरे (फूलदार चावल) दिए जाते हैं। लोगों का मानना है कि इस मुरमुरे को खाने से सभी बीमारियां ठीक हो जाती हैं। चात्तन की पत्थर की नाव अभी भी इस मंदिर में सुरक्षित है।

केवल 12 दिनों के लिए देवी के मंदिर खोलने के पीछे एक दिलचस्प कहानी है। प्रारंभ में ऐसा प्रतीत होता है कि देवी का मंदिर वर्ष भर में खुलता था। इस समय पुजारी भगवान शिव को अर्पित करने के लिए सभी सामग्री (नैवेद्यम की) थिडापिल्ली (मंदिर की रसोई) में रखकर दरवाजा बंद कर देते थे। श्रीकोविल की पूजा कर्म के बाद आते समय देखा तो, पूरी तरह से पका हुआ नैवेद्यम तैयार है। ऐसा माना जाता था कि देवी पार्वती भगवान महादेव के लिए भोजन तैयार करती थीं। किसी को भी रसोई में जाने की अनुमति नहीं थी। एक दिन एक भक्त ने पूजा समय समाप्त होने के पहले ही थिडापिल्ली का दरवाजा से झांककर देखा कि देवी पार्वती मंदिर के अंदर क्या कर रही है?। उसने देखा कि देवी पार्वती स्वयं नैवेद्यम पका रही थीं। भक्त जोर से बोले 'अम्मे जगदंबिका'। देवी बहुत क्रोधित हो गईं और पुजारी से कहा कि वह उनके दरवाजे हमेशा के लिए बंद कर दें और किसी का दर्शन करना नहीं चाहती। सभी भक्त रोने लगे और देवी से उस दुष्ट भक्त के कृत्य को क्षमा करने की प्रार्थना की। देवी ने उसे क्षमा कर दिया, लेकिन धनु माह (दिसंबर-जनवरी) के 'तिरुवाथिरा' दिन से शुरू करके केवल 12 दिनों के लिए अपने दरवाजे खोलने की अनुमति दी। आजकल देवी पार्वती के मंदिर वर्ष में केवल 12 दिनों के लिए खुलता है। ऐसा माना जाता है कि मंदिर में विराजमान भगवान शिव और देवी पार्वती अपने भक्तों को विवाह का आशीर्वाद देते हैं। मंदिर के सामने नंदिकेश्वर की मूर्ति है तथा अयप्पा, गणपति, महाविष्णु और देवी दुर्गा के मंदिर भी हैं।

यहाँ 12 दिन के उत्सव के लिए भारी संख्या में भक्त खासकर महिलाएं आती है। भीड़ को ध्यान में रखकर दर्शन एवं पूजा के लिए ऑनलाइन बुकिंग उपलब्ध कराया गया है। यह महिलाओं के लिए बहुत फायदेमंद है कि केवल निर्धारित समय पर मंदिर आ सकेगी। मंदिर की विशेष प्रकार पूजाओं में देवी को उड़याडा चारत्तल (Saree Offering), पुष्पालंकार (Flower Offering), सम्पूर्ण घी दीप (Completely Ghee Offering), पूर्ण पुष्पहार (Garland Offering) आदि शामिल है। इसके अतिरिक्त भक्त 'पट्टुम तालियुम नड़ायिल समर्पिक्कल' (Presenting Cloth and Manglyasutra at Sanctorum), तालीकूटम समर्पिक्कल (Offering Mangaylasutram), गर्भ गृह में तोटिल समर्पिक्कल (Offering Cradle), कलावरा निरक्कल (Offering Vegetables and Cereals) आदि विशेष प्रार्थना के रूप में दिया जाता है। इसके आलावा यहाँ वार्षिक उत्सव का आयोजन भी किया जाता है जो आठ दिनों के हैं। इस मंदिर में अन्य विशेष अवसरों पर अन्य त्योहारों का आयोजन भी किया जाता है।

सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले एआई शब्द

पी. मिधुन बाबू
सहायक प्रबन्धक (सिस्टम्स/सामग्री)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधुनिक प्रौद्योगिकी का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है, जो स्वास्थ्य सेवा, वित्त, शिक्षा और मनोरंजन जैसी विभिन्न उद्योगों को प्रभावित कर रहा है। जैसे-जैसे एआई विकसित हो रहा है, इसके साथ जुड़े शब्दावली भी बन रही है। एआई के क्षेत्र में नवीनतम विकास के साथ अद्यतित रहने के लिए सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले एआई शब्दों को समझना आवश्यक है। यहां एआई संबन्धी चर्चाओं में अक्सर उपयोग किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण शब्द दिए गए हैं:

1. एल्गोरिदम

एल्गोरिदम नियमों या निर्देशों का एक सेट है जिसका पालन करके कंप्यूटर किसी कार्य को पूरा करता है या किसी समस्या को हल करता है। एआई में, एल्गोरिदम मशीन लर्निंग मॉडल का आधार होते हैं, जो डेटा कैसे संसाधित किया जाता है और निर्णय कैसे लिए जाते हैं, इसका मार्गदर्शन करते हैं। सामान्य एल्गोरिदम में निर्णय वृक्ष (Decision Trees), न्यूरल नेटवर्क (Neural Networks), और सपोर्ट वेक्टर मशीन (Support Vector Machines) शामिल हैं।

2. मशीन लर्निंग

मशीन लर्निंग एआई का एक उपसमूह है जो सिस्टम को डेटा से सीखने और स्पष्ट रूप से प्रोग्राम किए बिना समय के साथ सुधार करने में सक्षम बनाता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का डिजाइन पैटर्न को पहचानने, भविष्यवाणी करने और नई जानकारी को अपनाने के लिए किया गया है। यह तकनीक अनुशंसा प्रणालियों (Recommendation Systems), वाक पहचान (Speech Recognition), और छवि वर्गीकरण (Image Classification) जैसे अनुप्रयोगों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती है।

3. डीप लर्निंग

डीप लर्निंग मशीन लर्निंग का एक विशेष रूप है जो जटिल डेटा पैटर्न को विश्लेषित करने के लिए मल्टी-लेयर न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है। यह छवि और वाक पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, और स्वायत्त ड्राइविंग जैसे कार्यों में विशेष रूप से प्रभावी है। जटिल समस्याओं को सुलझाने में इसकी उच्च सटीकता के कारण गहन शिक्षण की लोकप्रियता बढ़ी है।

4. न्यूरल नेटवर्क

न्यूरल नेटवर्क एक कम्प्यूटेशनल मॉडल है जो मानव मस्तिष्क की संरचना से प्रेरित है। इसमें नोड्स (Neuron) की परतें होती हैं जो सूचनाओं को संसाधित और प्रसारित करती हैं। न्यूरल नेटवर्क गहन शिक्षण के लिए मौलिक हैं, जो मशीनों को पैटर्न पहचानने और डेटा से सीखने में सक्षम बनाते हैं।

5. प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण

एनएलपी एआई की वह शाखा है जो मशीनों को मानव भाषा समझने, व्याख्या करने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है। इसका उपयोग चैटबॉट्स, वर्चुअल असिस्टेंट्स और भाषा अनुवाद सेवाओं में किया जाता है। एनएलपी के प्रमुख कार्यों में भावना विश्लेषण, वाक पहचान और पाठ निर्माण शामिल हैं।

6. कंप्यूटर विज़न

कंप्यूटर विज़न एआई का वह क्षेत्र है जो मशीनों को छवियों और वीडियो जैसी दृश्य जानकारी को समझने में सक्षम बनाता है। इसका उपयोग चेहरे की पहचान (Facial Recognition), वस्तु पहचान (Object Detection), और स्वायत्त वाहनों में किया जाता है। कंप्यूटर विज़न प्रणालियाँ दृश्य डेटा की सटीक पहचान और वर्गीकरण के लिए गहन शिक्षण मॉडल का उपयोग करती हैं।

7. डेटा सेट

डेटा सेट उन डेटा बिंदुओं का संग्रह है जिनका उपयोग मशीन लर्निंग मॉडल को प्रशिक्षित करने और उनका मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। डेटा सेट की गुणवत्ता और मात्रा एआई सिस्टम के प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। मॉडल की सटीकता और सामान्यीकरण सुनिश्चित करने के लिए डेटा सेट को आम तौर पर प्रशिक्षण, सत्यापन और परीक्षण सेट में विभाजित किया जाता है।

8. कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क

कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क (एएनएन) एक कंप्यूटिंग सिस्टम है जो जैविक न्यूरल नेटवर्क से प्रेरित है। यह इनपुट, हिडन और आउटपुट लेयर से मिलकर बना होता है। इसमें इनपुट, छिपी हुई और आउटपुट परतें होती हैं, जहाँ प्रत्येक न्यूरॉन भारित कनेक्शन के माध्यम से दूसरों से जुड़ा होता है। छवि वर्गीकरण और भाषण पहचान जैसे कार्यों के लिए डीप लर्निंग में कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है

9. रिइनफोर्समेंट लर्निंग

रिइनफोर्समेंट लर्निंग मशीन लर्निंग का एक प्रकार है जिसमें एक एल्गोरिदम माहौल से संपर्क करके और पुरस्कार या दंड के रूप में प्रतिक्रिया प्राप्त करके निर्णय लेना सीखता है। इसका उपयोग आमतौर पर रोबोटिक्स, गेमिंग और स्वायत्त प्रणालियों में किया जाता है।

10. बिग डेटा

बिग डेटा बहुत बड़े और जटिल डेटा सेट्स को दर्शाता है जिन्हें पारंपरिक डेटा प्रोसेसिंग विधियों से संभालना संभव नहीं होता।एआई प्रणालियां पैटर्न, प्रवृत्तियों और सहसंबंधों का विश्लेषण करने के लिए बड़े डेटा का लाभ उठाती हैं, जिससे बेहतर निर्णय लेने और भविष्यवाणियां करने में मदद मिलती है।

11. लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स

लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स ऐसे उन्नत एआई सिस्टम होते हैं जो विशाल मात्रा में टेक्स्ट डेटा से सीखकर मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। उदाहरणः GPT (Generative Pre-trained Transformer) - ओपन ए आई द्वारा विकसित, जिसमें GPT-3 और GPT-4 जैसे संस्करण शामिल हैं। ये अपनी मानव जैसी पाठ्य सृजन क्षमता के लिए जाने जाते हैं।

12. जनरेटिव एआई

जनरेटिव एआई एक प्रकार का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है जो मौजूदा डेटा से पैटर्न सीखकर नई सामग्री (जैसे टेक्स्ट, चित्र या संगीत) बनाता है।

13. चैटबॉट

चैटबॉट एक एआई प्रोग्राम है जिसे आमतौर पर एनएलपी का उपयोग करके मानव वार्तालाप का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है,

निष्कर्ष

जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी उन्नति कर रही है, एआई से जुड़ी शब्दावली भी विकसित हो रही है। इन सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले एआई शब्दों को समझना आवश्यक है ताकि इस क्षेत्र के नवीनतम विकास के साथ तालमेल बनाए रखा जा सके। एआई भविष्य को आकार देना जारी रखेगा, और इन शब्दों से परिचित होना व्यक्तियों और संगठनों को इसकी पूरी क्षमता का लाभ उठाने में सक्षम बनाएगा।

यात्रा विवरण
उगते सूरज का राज्य - अरुणाचल प्रदेश

बिजु सी.जे.
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

मुझे अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर जाने का सौभाग्य मिला। अरुणाचल प्रदेश भारत का एक पूर्वोत्तर राज्य है जिसकी सीमा चीन, म्यांमार और भूटान से लगती है। इसके अलावा मुझे पास के पर्यटन स्थल जीरो घाटी का भी दौरा करने का मौका मिला। उगते सूरज की भूमि के रूप में प्रसिद्ध इस शहर में सुबह 4.30 बजे सूर्योदय होता है। वर्ष 1962 में चीन ने इस प्रदेश पर कब्ज़ा कर लिया था और बाद में भारत ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था। वर्ष 1972 में अरुणाचल प्रदेश को राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। अब भी चीन इस प्रदेश के लिए दावे करता है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण भारत के अन्य नागरिकों को अरुणाचल में प्रवेश करने के लिए आईएलपी (इनर लाइन परमिट) की आवश्यकता होती है। बर्फ से ढकी चोटियों, ऊंचे पहाड़ों, सुंदर नदियों, ऊंचे-ऊंचे घास के मैदानों और विशाल अछूते जंगलों से भरे अरुणाचल प्रदेश, 'पृथ्वी पर अंतिम शांगरी ला' के रूप में जाना जाता है। इसकी शक्तिशाली चोटियाँ, अदम्य नदियाँ, कलकल करते झरने और वनस्पतियों से भरे हुए इस प्रदेश सचमुच देखने लायक है।

हमारी यात्रा कोच्चि से कोलकाता होते हुए राजधानी ईटानगर तक थी। कोलकाता से रेल द्वारा वहां पहुंचने के लिए लगभग 30 घंटे लगते हैं। रेल यात्रा सिक्किम के 'चिकन नेक' से गुजरते हुए असम के गुवाहाटी से ईटानगर से 15 किमी दूर नाहरलागुन रेलवे स्टेशन तक की है। लेकिन समय बचाने के लिए हमने हवाई जहाज से यात्रा की। इटानगर से 30 किमी दूर स्थित डोनयी पोलो हवाई अड्डा एक खूबसूरत छोटी हवाई अड्डा है जिसका उद्घाट न दो साल पहले हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने किया था। इससे पहले, यह एक ऐसी हवाई अड्डा था जहां केवल 16 लोगों की क्षमता वाले छोटे विमान और सैन्य हेलीकॉप्टर ही उतर सकते थे। यह राज्य का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है। फिलहाल, कुछ बड़े और छोटे विमान ही कोलकाता और दिल्ली के लिए उड़ान भर रहे हैं। यात्रियों की संख्या, सीमा क्षेत्र, भूप्रकृति और बदलते मौसम इसके कारण हो सकते हैं।

हवाई अड्डे से ईटानगर तक की यात्रा काफी रोचक रही। चूंकि यह हिमालयी क्षेत्र है, इसलिए पूरी यात्रा के दौरान खूबसूरत दृश्य देखने को मिलते हैं। जैसे हमारे दक्षिण के इडुक्की-मुन्नार और ऊटी क्षेत्र। एक अनुभवी सैन्य अधिकारी, जो मलयाली है, ने बताया कि भूकंप और भूस्खलन यहां रोजाना की घटना है। उन्होंने यह भी कहा कि वहां तकरीबन 500 से अधिक मलयाली परिवार हैं। इटानगर में कई केरल वासियों के होटल भी हैं। यात्रा में

आपको छोटे-छोटे गाँव दिख जायेंगे। यहाँ के घर बांस और सरकंडों से बनाए गए थे, तथा उनकी छतें खंभों पर बनी थीं। लेकिन हर किसी के पास एक एसयूवी कार है। यहाँ हर चीज़ पर कर (टैक्स) कम है। नदियाँ, नाले और झरने रास्ते में दिखाई देते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी भी देखी जा सकती है।

यह स्थान समुद्र तल से 5300 मीटर ऊपर स्थित है। कुछ जगहें मुझे कश्मीर जैसी देखने लगा और तमिलनाडु के ऊटी जैसे रिसॉर्ट और होटल से भरे हैं। इसमें कार्यालय, विधानसभा, सचिवालय और राजभवन शामिल हैं। वहाँ बहुत अधिक यातायात है. महिलाएं तेजी से वाहन चलाती नजर आ रही हैं। अधिकांश व्यापार महिलाओं द्वारा किया जाता है। वे खेती करती हैं, मांस या गोश्त का दुकान चलाती है और रात 8 बजे तक सड़क किनारे चिकन 65 की दुकान चलाती है। कई पुरुष पारंपरिक तलवार जैसे हथियार पहने हुए नजर आते हैं। शहर में कुछ महिलाओं को पारंपरिक परिधान पहने देखा जा सकता है।

अरुणाचल के लोग हिंदू, ईसाई, आदिवासी, बौद्ध और सूर्य और चंद्रमा की पूजा करनेवाले द्योनी पोलो संप्रदाय के हैं। ईटानगर में कई पर्यटन केन्द्र हैं। मुझे वहां के बड़े बौद्ध मंदिर में जाने का अवसर मिला। राज्य संग्रहालय, बौद्ध मंदिर, इटावा किला, चिड़ियाघर, गंगा झील आदि अन्य आकर्षण केंद्र हैं। अरुणाचल प्रदेश में कई ऐसे पर्यट न स्थल हैं जहां बहुत कम लोग जाते हैं। तवांग, ज़ेला दर्रा, बोम्बिला दर्रा, चीन सीमा पर स्थित लद्दाख, स्विट्जरलैंड की तरह खूबसूरत मेचुका, जीरो घाटी आदि। ये केवल नमूने हैं।

जीरो घाटी

वापसी यात्रा से एक दिन पहले दर्शनीय स्थलों की यात्रा का दिन था। हमने 100 किलोमीटर दूर विश्व प्रसिद्ध कृषि जनजातीय घाटी जीरो घाटी को चुना। 3 घंटे की यात्रा. यद्यपि यह राष्ट्रीय राजमार्ग था, तथा सुंदर दृश्यों से भरपूर यात्रा थी, फिर भी कई स्थानों पर बड़े भूस्खलन देखे जा सकते थे। सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) सीमावर्ती क्षेत्रों में सभी सड़कों की देखरेख करता है। उनके वाहन और सैन्य वाहन सड़क पर देखे जा सकते हैं। कई स्थानों पर सड़कें घने कोहरे से ढकी हुई हैं। हम दोपहर तक जीरो घाटी क्षेत्र में पहुंच गये। ऐसा महसूस हुआ कि हम किसी दूसरी दुनिया में आ गए हों। हमने केरल के पालक्काड़ और कुट्टनाड जिला के धान के खेतों की सुंदरता का आनंद लिया है। लेकिन ज़ीरो वैली की खेती दूसरे स्तर की है। जिसका मज़ा अलग है। अरे.. वाह। कितनी सुंदरता। प्रकृति का अपना कमाल।

सड़क के दोनों ओर खेत, खूबसूरत रिसॉर्ट, बांस की फूस से बने घर, देशी बांस के जंगल और खेतों में काम करती स्थानीय महिलाएं, कुछ हिस्सों में ऐसा महसूस होता है जैसे आप कश्मीर में आ गए हों। जीरो एक खूबसूरत घाटी है जो कई किलोमीटर तक बड़े पहाड़ी क्षेत्र से घिरी हुई है। यहां वर्ष में एक बार अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला जीरो संगीत महोत्सव विश्व प्रसिद्ध है।

आपको कहीं भी लंच का ऑर्डर देने के बाद एक घंटे तक इंतजार करना पड़ता है। आपको किसी भी होटल में रेडीमेड खाना नहीं मिलेगा। खाने तैयार होने तक हमने एक खूबसूरत झील का दौरा किया। बीच में वहां के एक प्रमुख जनजातीय समूह 'अपातानी' के संयुक्त परिवार से मिलने और उनसे परिचित होने का मौका मिला। हमने उनके कृषि कीवी बाग का भी दौरा किया। अतीत में इस क्षेत्र की सुंदर महिलाओं को अन्य क्षेत्रों के पुरुष अपहरण कर ले जाते थे। इससे बचने के लिए महिलाएं अपने चेहरे पर काले टैटू बनवा लेती थीं और नाक में बड़े छेद करवा लेती थीं, जिससे उनका चेहरा विकृत दिखने लगता था। मुझे ऐसी बुजुर्ग महिलाएं भी देखने को मिलीं।

यहाँ एक शिव मंदिर है। जंगल के बीच में दुनिया का सबसे ऊंचा (25 फीट) शिवलिंग है, जो एक प्राकृतिक मंदिर है। अनेक किंवदंतियां समेटे इस मंदिर को श्री सिद्धेश्वर नाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहाँ के बाजार सप्ताह में एक या दो दिन खुले रहते हैं। यह क्षेत्र, जो यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों में से एक है, दुर्लभ ऑर्किड का भी प्रदेश है। यह समुद्र तल से 6,000 फीट ऊपर स्थित है। हमारे ड्राइवर ने हमें पूरा पर्यटन केंद्र दिखाया। एक खूबसूरत और अनदेखे सफर की संतुष्टि के साथ, हम शाम 5 बजे जीरो घाटी से निकल पड़े....

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, मैसूर

अरुण एम वी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र का क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 04.01.2025 को मैसूर मुक्त विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह हॉल में आयोजित किया गया। राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहा है। इस सिलसिले में प्रत्येक वित्तीय वर्ष में चार क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। मैसूर में आयोजित यह सम्मेलन वर्ष 2024-25 का पहला सम्मेलन है। हिंदी के प्रयोग के आधार पर देश को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है- क,ख और ग । इन क्षेत्रों में केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अधीन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां और आठ क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय कार्यरत हैं। दक्षिणी क्षेत्र में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक तथा दक्षिण-पश्चिम में केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी और लक्षद्वीप शामिल हैं। यह सम्मेलन दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन है। समारोह में वर्ष 2023-24 में राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए विभिन्न श्रेणियों के तहत केन्द्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों को प्रमाण-पत्र एवं शील्ड देकर राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय और बिहार के आदरणीय राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने भाग लिया। मैसूर के सांसद यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार भी उपस्थित थे। इसके अलावा प्रो(डॉ) शरणप्पार वी हाल्सेय, कुलपति, कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, प्रो एम कृष्णन, कुलपति, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर, श्री अनुराग कुमार, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इलेक्ट्रॉनिक्स कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, बेंगलुरु, पी शिवकुमार, सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलुरु, श्री विनोदकुमार, कार्यपालक निदेशक,पंजाब नेशनल बैंक और प्रो शैलेंद्र मोहन,निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर आदि समारोह में उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग ने सभा का स्वागत किया और संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जौली ने धन्यवाद व्यक्त किया। समारोह में केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि के प्रमुख और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहें। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोची एवं बेंगलूरू के उप निदेशकों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर विभिन्न कार्यालयों और कंपनियों की पत्रिकाओं का विमोचन भी किया गया।

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ अभियान का दस साल

दिव्या जोणी
अ. कार्यालय सहायक

लड़कियों की सुरक्षा, शिक्षा और समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश भर में चलायी गयी सामाजिक अभियान है बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ। इस अभियान का उद्देश्य लड़कियों को सुरक्षा, शिक्षा और सशक्त बनाना तथा भारत में लैंगिक असंतुलन तथा घटते बाल लिंगानुपात की समस्या का समाधान करना है। इसका योजना का समग्र लक्ष्य है बालिकाओं का सम्मान करना और उनको शिक्षा के लिए सक्षम बनाना साथ ही महिला सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दों को संबोधित करना है। इस योजना का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्रीजी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में किया था। यह महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालयों का त्रि-मंत्रालयी प्रयास है। हम वर्ष 2025 में इस योजना की दसवीं वर्षगांठ मना रहे हैं। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने एक्स पर अपने पोस्ट में कहा कि

"हम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आंदोलन के 10 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। पिछले एक दशक में, यह एक परिवर्तनकारी, लोगों द्वारा संचालित पहल बन गई है और इसमें सभी क्षेत्रों के लोगों की भागीदारी रही है"। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' लैंगिक भेदभाव को दूर करने में सहायक रहा है और साथ ही इसने यह सुनिश्चित करने के लिए सही माहौल तैयार किया है कि बालिकाओं को शिक्षा और अपने सपनों को पूरा करने के अवसर मिलें। श्री मोदी ने कहा, लोगों और विभिन्न सामुदायिक सेवा संगठनों के समर्पित प्रयासों की बदौलत 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' ने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

'बेटा-बेटी एक समान' है। इस दृष्टि से पिछले दस वर्षों से राष्ट्रव्यापी जागरूकता और प्रचार अभियान चला आ रहे हैं। इस योजना के प्रारम्भ में शिशु लिंग अनुपात कम वाले चयनित 100 जिलों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्य करने में हम सक्षम हुए। बुनियादी स्तर पर लोगों को प्रशिक्षण देकर, संवेदनशील और जागरूक बनाकर तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी सोच को बदलने पर जोर दिया गया है। कन्या शिशु के प्रति समाज के नजरिए में परिवर्तनकारी बदलाव लाने में हम सफल हुए हैं। अनेक कार्य योजना बनाई गयी, क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलायी गयी। इस योजना का व्यापक रूप से प्रचार करने के लिए जागरूकता बढ़ाने से संबंधित गतिविधियां चलायी गयी।

इसका असर दस वर्ष के बाद समाज में देखा जा सकता है। आज बड़ी संख्या में लड़कियां पढ़ रही है, वे पहले से अधिक सुरक्षित हैं और सभी क्षेत्रों में यानि डॉक्टर, पुलिस अधिकारी, इंजीनियर, आईएएस और आईपीएस अधिकारी और अन्य तमाम क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। काफी लोकप्रिय बनी इस अभियान भारत में लड़कियों की स्थिति ऊपर उठाने और उनका सशक्तिकरण सुनिश्चित करने में कामयाब सिद्ध हुआ है। सभी हितधारकों के सहयोग से समाज में क्रांतिकारी एवं सकारात्मक बदलाव लाने और बेटी के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन लाने में सरकार की यह पहल सहायक स्थापित हुई।

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम

के.के. रामचंद्रन
उप निदेशक (राजभाषा) सेवानिवृत्त
आयकर विभाग कोच्ची

हिंदुस्तान ओर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड, अंबलमुगल, कोच्ची के तत्वावधान में केरल के विभिन्न विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों के हिन्दी छात्रों के लिए आयोजित 'राजभाषा चेतना कार्यक्रम' का पहला चरण 2024 फरवरी / मार्च महीने, तथा इसका दूसरा चरण 2024 अगस्त/सितंबर महीनों में सम्पन्न हुआ था। प्रस्तुत कार्यक्रम का तीसरा एवं अंतिम चरण राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम के रूप में 2025 फरवरी महीने में आयोजित किया गया जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नप्रकार हैं :

श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रादेशिक केंद्र, तिरूर

श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रादेसशिक केंद्र, तिरूर में दिनांक 06.02.2025 को राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुबह 10.00 बजे विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ मूसा ने कार्यक्रम उदघाटन किया। डॉ सरिता , हिन्दी विभागाध्यक्षा ने सभा में उपस्थित संकाय सदस्यों, अध्यापक गण एवं छात्रों का स्वागत किया। श्री ओ रमेश, मुख्य प्रबन्धक (रा भा), एच ओ सी एल, कोच्चि ने प्रथम सत्र में कार्यक्रम की रूप रेखा एवं हिन्दी छात्रों को नौकरी प्राप्त होने की विभिन्न क्षेत्रों एवं अवसरों के बारे संक्षिप्त जानकारी दी। श्री पी के पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबन्धक (से नि), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि. , कोयंबत्तूर ने राजभाषा हिन्दी की संरचनात्मक पक्ष पर विस्तार से छात्रों को अवगत कराया जो उनके के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक साबित हुआ। श्री के के रामचंद्रन, उप निदेशक (रा भा) (से नि), आयकर विभाग, कोच्चि ने राजभाषा के विभिन्न पहलुओं, सामान्य जानकारी एवं हिन्दी के प्रयोग संबंधी नई प्रौद्योगिकी की अद्यतन जानकारी आदि विभिन्न विषयों को समाहित करके प्रश्नोत्तरी के माध्यम से एक ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में छात्रों द्वारा फीड बैक दिया गया जिसमें उन्होंने इस तरह के कार्यक्रमों के आवधिक आयोजन का अनुरोध किया जो उनके कौशल संवर्धन में सहायक सिद्ध होगा। करीब 30 एम ए छात्रों ने कार्यक्रम का फायदा उठाया। समापन समारोह में श्री के शेषन, सहायक प्रोफ़सर, (से नि), सरकारी आर्ट्स कॉलेज, मींचन्ता, कोषिक्कोड ने छात्रों को हिन्दी में बोलने की क्षमता बढ़ाने की अनिवार्यता पर ज़ोर देते हुए हिन्दी भाषा एवं साहित्य सीखने के महत्व पर प्रकाश डाला। सभी प्रतिभागियों को एच ओ सी एल द्वारा प्रायोजित स्मृति चिह्न भी प्रदान किए गए। शाम 4.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पी जयचन्द्रन - मशहूर पार्श्व गायक

षीजा टी.पी.
रिकार्ड कीपर

दक्षिण भारत के मशहूर पार्श्व गायक पी जयचन्द्रन का 9 जनवरी 2025 को केरल के त्रिशूर में निधन हो गया। केरल में 'भाव गायकन' के नाम से वह जाना जाता था। अपने मधुर और सुरीली आवाज़ में पिछले छः दशकों से अधिक समय तक मलयालम का नहीं समूचे दक्षिण भारत की भाषाओं के संगीत प्रेमियों के ह्रदय को आपने मंत्रमुग्ध किया। पी जयचन्द्रन ने प्रेम, विरह, भक्ति जैसे भावनाओं को अपने गीतों के माध्यम से गंभीर रूप से अभिव्यक्त किया। हिंदी सहित दक्षिण भारत की सभी भाषाओं करीब सोलह हजार से अधिक गीतों को अपनी आवाज़ देनेवाले इस दिग्गज का निधन केवल केरल के नहीं समूचे भारत के संगीत प्रेमियों के लिए अपूरणीय क्षति है।

पी जयचंद्रन को बचपन से ही शास्त्रीय संगीत में बड़ी रुचि थी। वर्ष 1965 में आपने फिल्म 'कुंजाली मराक्कार' के गीत से अपनी संगीत यात्रा शुरू की। आपका पहला रिलीज गाना फिल्म 'कलितोज़्हन' का 'मंजालयिल मुंगित्तोरथी' गाना है। वहाँ से उन्हें पीछे मुड़कर देखने का अवसर न मिला। उनके समकालीन मशहूर गायक येसुदास का सहयोग इस क्षेत्र में उन्हें प्राप्त हुआ। मलयालम और तमिल भाषा के लोकप्रिय संगीतकारों के साथ उन्होने काम किया। तमिल के संगीतकार इलयाराजा के निर्देशन में गाए गए उनका 'रासाथी उन्नई कणाथा नेंजू' गाना पूरे तमिलनाडु के लोगों को मोहित किया। मोहक शब्दों में आपने हिंदी में भी गीत गाया जो बिलकुल रोचक एवं भावुक बननेवाले हैं।

स्वर्गीय पी जयचंद्रन जी को केरल सरकार से पाँच बार श्रेष्ठ पार्श्व गायक का पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया। 'श्रीनारायण गुरु' नामक फिल्म के लिए उनका भक्ति गीत 'शिवशंकरा सर्व शरणया विभो' के लिए आपको राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें तमिलनाडु सरकार का राज्य पुरस्कार और केरल सरकार के प्रतिष्ठित जे सी डेनियल पुरस्कार भी मिला था। इस महान गायक के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए माननीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि 'उन्हें मधुर आवाज़ का वरदान प्राप्त था, जो विभिन्न भावनाओं की विस्तृत शृंखला को व्यक्त करती थी'।

दक्षिण भारतीय संगीत की दुनिया में पी जयचंद्रन ने खूब नाम कमाया और उनका वियोग केरल के संगीत प्रेमियों के लिए नहीं बल्कि पूरे दक्षिणी भारतीय संगीत क्षेत्र के लिए बड़ा नुकसान है। जयचंद्रन के चुने गए गानों में निम्न शामिल है:

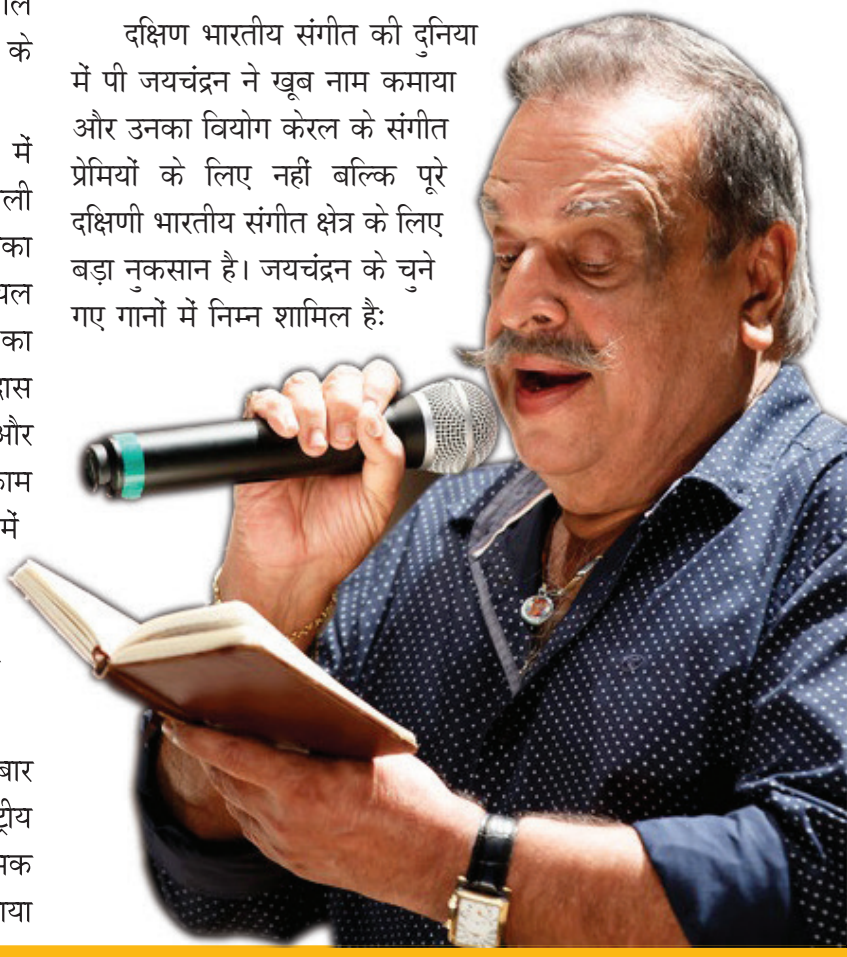

मंत्रालय द्वारा कोची कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन को अधिक प्रभावी एवं कारगर बनाने में निरीक्षण का अपना महत्व है। कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति का जायजा लेने और कार्यान्वयन सुगम बनाने में निरीक्षण अनिवार्य है। रिपोर्ट के ज़रिए प्राप्त जानकारी एवं आँकड़े से कार्यान्वयन की प्रगति समझने के साथ-साथ निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में आनेवाली बाधाओं और उन्हें दूर करने संबंधित उपायों पर चर्चा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए निरीक्षण हमेशा फायदेमंद सिद्ध होता है। राजभाषा विभाग द्वारा ज़ारी वार्षिक कार्यक्रम में यह निर्देश दिया गया है कि मंत्रालयों/विभागों के संबंधित अधिकारियों/वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों का समय- समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण राजभाषा अनुभाग के अधिकारियों के साथ किया जाए।

इसके अनुपालनार्थ रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री राकेश कुमार ने 14 जनवरी 2025 को हमारी कंपनी का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। निरीक्षण के पहले प्रश्नावली भरकर विभाग को दी गयी थी। निरीक्षण के दौरान कंपनी में राजभाषा के फाईल एवं दस्तावेज़ों की जांच की गयी। इसके बाद विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों, वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। इसमें संयुक्त निदेशक ने राजभाषा कार्यान्वयन के विविध विषयों पर विस्तार से बताया और इसको अधिक कारगर बनाने के लिए उपचारात्मक उपाय दिए गए।

कंपनी के कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम जे जगदीश ने प्रस्तुत बैठक में कंपनी में राजभाषा के प्रयोग पर अपना विचार रखा। संयुक्त निदेशक ने अधिकारियों के सवाल पर उत्तर एवं सुझाव दिए और कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन पर अपनी संतुष्टि प्रकट की।

गणतंत्र दिवस समारोह 2025

साइजु वर्गीस
उप प्रबंधक (एच आर)

हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड में 76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में 26 जनवरी 2025 को एक भव्य समारोह आयोजित किया गया । कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 8:00 बजे हुई। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। तिरंगा फहराते ही पूरे परिसर में देश भक्ति की भावना गूंज उठी साथ ही राष्ट्रगान गाया गया।

ध्वजारोहण के पश्चात, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने अपने प्रेरणादायक भाषण में भारत के संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और औद्योगिक क्षेत्र में एचओसीएल के योगदान पर प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने सभी कर्मचारियों को राष्ट्र की उन्नति में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया और कंपनी की उपलब्धियों तथा भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में कंपनी में और त्रिपुनिथुरा के स्कूल छात्रों के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। एचओसीएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने विजेताओं को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। जिससे सभी उपस्थित लोगों के बीच हर्ष और उल्लास का माहौल बना रहा। समारोह का समापन मिठाई वितरण के साथ हुआ।

गणतंत्र दिवस के इस आयोजन ने कर्मचारियों में देशभक्ति की भावना को और प्रबल किया तथा सभी को एकता और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा दी।

कर्मचारियों के लिए हिन्दी कंप्यूटर प्रशिक्षण

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं सरकारी कार्यों में इसके अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु हमारी कंपनी में 11 से 13 मार्च 2025 तक हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग, यूनिकोड, राजभाषा टूल्स तथा कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की दक्षता प्रदान करना और उनको प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देना था।

प्रशिक्षण में हिंदी टाइपिंग, यूनिकोड एवं की-बोर्ड लेआउट, राजभाषा सॉफ्टवेयर एवं टूल्स, ऑनलाइन हिंदी संसाधन तथा हिंदी में ई-मेल एवं पत्राचार जैसे विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों ने हिंदी टाइपिंग टूल्स, इनस्क्रिप्ट एवं फोनेटिक लेआउट, राजभाषा सॉफ्टवेयर, ऑनलाइन टंकण एवं अनुवाद टूल्स तथा कार्यालयी हिंदी पत्राचार का अभ्यास किया।

प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक बताया। उन्होंने हिंदी टाइपिंग एवं सॉफ्टवेयर

के प्रति विशेष रुचि दिखाई तथा भविष्य में इस प्रकार के प्रशिक्षण जारी रखने की मांग की।

तीन दिवसीय यह प्रशिक्षण अत्यंत सफल रहा, जिससे प्रतिभागियों को हिंदी में कंप्यूटर पर कार्य करने की दक्षता प्राप्त हुई। इससे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा और कार्यों की गति में सुधार होगा।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (पी एस यू), कोची को प्राप्त वर्ष 2023-24 का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार स्वीकार करते हुए एच ओ सी एल के कार्यपालक निदेशक एवं यूअईसी तथा सचिव, नराकास, श्रीमती एम सी षीला, बी एस एन एल

मंत्रालय द्वारा कंपनी के राजभाषा निरीक्षण के अवसर पर रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग के संयुक्त निदेशक श्री राकेश कुमार कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए

विश्व हिंदी दिवस 2025 के अपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम - विविध झलकियाँ

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, मैसूर

विश्व हिंदी दिवस 2025

आजकल विश्व की प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी को अधिक स्वीकार्यता प्राप्त हो रही है। भले ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा में हिंदी शामिल नहीं है, इसको शामिल करने का प्रयास पिछले कई वर्षों से हो रहा है। इसमें वर्ष 2006 से प्रारंभ किए गए विश्व हिंदी दिवस की भूमिका महत्वपूर्ण है। विश्व भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। 10 जनवरी 1975 को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन भारत के नागपूर में सम्पन्न हुआ था। इसकी याद में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2025 का थीम है 'एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज'। यह हिंदी के माध्यम से भाषाई आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

एचओसीएल में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कर्मचारियों से अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने, वार्तालाप में हिंदी का प्रयोग करने और बैठकों में हिंदी का इस्तेमाल के लिए अनुरोध किया गया। 09.01.2025 को कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रश्नोत्तरी आयोजित की गयी और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

कंपनी द्वारा 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस पर श्रीशंकरा कॉलेज, कालड़ी में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन श्रीशंकरा कॉलेज, कालड़ी के प्राचार्य प्रो. (डॉ) अनिलकुमार एम. ने किया। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ रतीश सी नायर ने स्वागत भाषण दिया और कार्यकम के बारे में बताया और इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं के लिए विश्व भाषा हिंदी, राजभाषा हिंदी और हिंदी में रोजगार की संभावनाएं पर कक्षा चलायी गयी। विश्व भाषा हिंदी विषय पर श्री पी के पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रचालन) (सेवानिवृत्त) भारत पेट्रोलियम, कोयंबतूर ने कक्षा का संचालन किया। राजभाषा नीति और सूचना प्रौद्योगिकी विषय पर श्री के के रामचंद्रन, उप निदेशक (राजभाषा) (सेवानिवृत्त) आयकर विभाग,कोची ने कक्षा ली और श्री रमेश ओ, मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा) ने रोजगार पर जानकारी प्रदान की। इसके अतिरिक्त छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी चलायी गयी और विजेताओं को उपहार स्वरूप भारत 2024 नामक हिंदी किताबें भेंट की। इस विशेष कार्यक्रम में तकरीबन 50 से अधिक छात्र उपस्थित रहे। कॉलेज के अध्यापक बंधुओं के विशेष सहयोग से वर्ष 2025 का विश्व हिंदी दिवस धूम-धाम से मनाया गया। छात्रों ने कार्यक्रम के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की। श्री अरुण एम वी,वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने कंपनी का आभार व्यक्त किया।

एचओसीएल में सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन

सड़क सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के तहत, एचओसीएल ने सड़क सुरक्षा सप्ताह के दौरान कर्मचारियों को वाहन और पैदल सुरक्षा के बारे में जागरूक करने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया।

उत्सव की शुरुआत 30 जनवरी 2025 को सड़क सुरक्षा क्विज से हुई, जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों की सड़क सुरक्षा के बारे में सामान्य ज्ञान की परीक्षा लेना था। इस क्विज में यातायात नियमों, सुरक्षा उपायों और असुरक्षित ड्राइविंग प्रथाओं के प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह गतिविधि न केवल जागरूकता बढ़ाने में सहायक थी, बल्कि यह याद दिलाने का भी एक तरीका था कि सड़क सुरक्षा सभी के कल्याण के लिए कितनी महत्वपूर्ण है।

इसके अगले दिन, 31 जनवरी 2025 को ड्राइविंग स्किल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य वाहन के आकार का सही आकलन करने और अन्य वाहनों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने के महत्व को उजागर करना था। प्रतिभागियों ने एक श्रृंखला की व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लिया, जिसमें उन्हें तंग स्थानों से वाहन को सावधानी से निकालने और सुरक्षित रूप से चलाने का अभ्यास किया। इस प्रतियोगिता ने न केवल ड्राइविंग कौशल को तेज किया, बल्कि यह भी बताया कि सड़क पर वाहन के आकार और निकटता के बारे में जागरूकता कितनी महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, सप्ताह भर के कार्यक्रमों के एक हिस्से के रूप में सड़क सुरक्षा टिप्स प्रतियोगिता का

तरुणदेव ए.पी.
मुख्य प्रबन्धक (टीएसएस/फायर एंड सेफ़्टी)

आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता ने प्रतिभागियों को दोनों, ड्राइवरों और पैदल चालकों के लिए सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करने और अपनी जानकारी प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

एचओसीएल में यह सप्ताह भर चलने वाली यह उत्सव न केवल प्रतिभागियों को मूल्यवान कौशल प्रदान करने में सहायक था, बल्कि यह सड़क सुरक्षा के महत्व को भी दोनों, ड्राइवरों और पैदल चालकों के लिए सुदृढ़ किया। यह पहल कर्मचारियों के बीच जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी मंच साबित हुई, और सभी को यह याद दिलाया कि सड़क सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी है, जो जीवन बचाने में मदद कर सकती है।

इस तरह की प्रतियोगिताओं और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर, एचओसीएल संगठन और व्यापक समुदाय में एक सुरक्षित और जागरूक ड्राइविंग संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

संविधान की 75वीं वर्षगांठ समारोह

विनोदकुमार के.वी.
सहायक प्रबंधक एवं कल्याण अधिकारी (एच आर)

26 नवंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने भारत के संविधान को अपनाया। 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ। भारत सरकार ने देश के संविधान को अपनाने के 75 वर्ष पूरे होने के पावन अवसर पर 'हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान' अभियान के तहत वर्ष भर के कार्यक्रम का आयोजन किया है। भारत का संविधान दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है। नागरिकों के अधिकार, कर्तव्य, समानता आदि अनेक प्रावधान इसमें शामिल है जो भारत के नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने एवं अपने अधिकार सुरक्षित रखने के लिए एक महत्वपूर्ण रचना है। यह जनतंत्र की आधारशिला है। हम संविधान लागू होने के 75 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। इस अवसर पर एचओसीएल में विविध प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गयी।

हमारी कंपनी में भारतीय संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन किया गया। इसके बाद नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों तथा अन्य संवैधानिक मुद्दों पर आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता 22.01.2025 को आयोजित की गयी। भारत के संविधान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 23.01.2025 को आयोजित की गयी। श्री रमेश ओ,मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा) ने क्विज मास्टर के रूप में प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। इसमें 11 टीम ने प्रतिभागिता की। इस समारोह के सिलसिले में सरकारी व्यावसायिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, अंबलमुगल में छात्र-छात्राओं के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भारतीय संविधान के बारे में जागरण सत्र चलाया गया और छात्रों ने इसमें बढ़- चढ़ कर भाग लिया। 26 जनवरी 2025 को हमारी कपम्नी में गणतन्त्र दिवस मनाया गया। इस समारोह के अवसर पर विजेताओं का पुरस्कार वितरण कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सजीव बी ने किया। कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी सहित कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

एच ओ सी एल में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एच.ओ.सी.एल. में वर्ष 2024-25 के दौरान आयोजित गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विवरण निम्नलिखित हैं:

1. 'ग' क्षेत्र में उपक्रम की श्रेणी में क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार - प्रथम पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विभिन्न केंद्रीय सरकारी कार्यालयों/ राष्ट्रीयकृत बैंकों/ सार्वजनिक उपक्रमों/ बीमा कंपनियों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु प्रतिवर्ष क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करके पुरस्कृत करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु प्रोत्साहन दे रही है। दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों के लिए हमारी कंपनी को उपक्रम की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ । राजभाषा विभाग द्वारा दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों के लिए वर्ष 2023-24 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण के लिए 04 जनवरी 2024 को मैसूर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में बिहार के राज्यपाल माननीय श्री आरिफ़ मुहम्मद खान और केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय की उपस्थिति में हमारे कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम.जे. जगदीश और वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री एम.वी. अस्ण ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

2. बाहरी संपर्क कार्यक्रम के तहत राजभाषा चेतना कार्यक्रम/संगोष्ठी का आयोजन ।

हिंदुस्तान ओर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड, अंबलमुगल, कोच्ची के तत्वावधान में केरल के विविध जिलों में स्थित विश्वविद्यालयों/ विभिन्न महाविद्यालयों के स्नातक (बी.ए.) और स्नातकोत्तर (एम.ए.) हिन्दी छात्रों के लिए वर्ष 2024 के अगस्त और सितंबर माह में राजभाषा चेतना कार्यक्रम और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वद्यालयों तथा कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले हिन्दी छात्र-छात्राओं को राजभाषा के महत्व, संवैधानिक प्रावधान और इस क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न रोज़गार के अवसरों की जानकारी तथा राजभाषा से संबंधित अद्यतन प्रौद्योगिकी की जानकारी देने के साथ ही आवश्यक कौशल संवर्धन प्रदान करना भी इस कार्यक्रम का लक्ष्य रहा। इस उद्देश्य से निम्न संस्थानों/ कैम्पसों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमों के अलावा कार्यालय के बाहर एक 'आउटरीच कार्यक्रम' के रूप में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया । छात्रों को अपने ज्ञान भंडार को समृद्ध बनाने में यह कार्यक्रम सफल सिद्ध हुआ है। इस 'आउटरीच कार्यक्रम' के तहत कुल पाँच संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं ।

1. गवर्नमेंट विक्टोरिया कॉलेज, पालक्काड / GOVT VICTORIA COLLEGE, PALAKKAD
2. एन एस एस कॉलेज, ओट्टापालम, पालक्काड / NSS COLLEGE, OTTAPPALAM, PALAKKAD
3. हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय / DEPT OF HINDI, UNIVERSITY OF CALICUT, KOZHIKODE
4. गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, कालीकट / GOVT ARTS AND SCIENCE COLLEGE, KOZHIKODE
5. जमूरिन गुरुवायुरप्पन कॉलेज, कॉलेज, कालीकट/ ZAMOORIN GURUVAYOORAPPAN COLLEGE, KOZHIKODE

3. मंत्रालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण

कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति का जायजा लेने और कार्यान्वयन सुगम बनाने में निरीक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री राकेश कुमार ने 14 जनवरी 2025 को हमारी कंपनी का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। संयुक्त निदेशक ने राजभाषा के फाइल और दस्तावेज़ों की जांच की। इसके बाद विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों, वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। कंपनी के कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम.जे. जगदीश ने कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन के तहत की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों पर विस्तार से बताया।

4. अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, नई दिल्ली में भागीदारी।

14 और 15 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हिंदी दिवस समारोह 2024 में हमारे कार्यालय से तीन अधिकारियों ने भाग लिया। राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित इस भव्य एवं गरिमामयी समारोह का उद्घाट न माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने किया। राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए कार्यालयों का पुरस्कार वितरण भी सम्पन्न हुआ। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में राजभाषा के विभिन्न विषयों विद्वानों ने विशेष प्रस्तुतियाँ दीं।

5. हिन्दी पखवाड़ा समारोह - सितम्बर 2024

हमारी कंपनी में 14 से 29 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़ा धूम-धाम से मनाया गया। इस समारोह के दौरान कर्मचारियों, निकटस्थ सरकारी स्कूल के छात्रों और इकाई के कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन, अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए कार्यशालाएँ और विभागाध्यक्षों के लिए राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने हेतु प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रतियोगिताओं में सुलेख, प्रश्नोत्तरी, हिंदी टंकण, श्रुत लेख, सुगम संगीत, रचना कार्य-निबंध, शब्दावली, टिप्पणी और अनुवाद आदि शामिल थे। सरकारी महिला उच्च माध्यमिक विद्यालय, तृप्पूणित्तुरा के छात्राओं के लिए प्रतियोगिताओं और कर्मचारियों के बच्चों के लिए वाचन प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। दिनांक 04.11.2024 को आयोजित समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया ।

6. नराकास, कोच्चि के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन और विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन

नराकास(पीएसयू), कोच्चि के वर्ष 2024 के संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समारोह 5 से 19 फरवरी 2025 तक विविध कार्यकमों के साथ मनाया गया। समारोह का उद्घाटन 05.02.2025 को हमारी कंपनी में आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन कंपनी के निदेशक (वित्त) श्री योगेंद्र प्रसाद शुक्ला जी ने किया। कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम.जे. जगदीश ने अध्यक्षता की। इसके दौरान तीन प्रतियोगताओं यथा सुलेख, प्रशासनिक शब्दावली तथा टिप्पण, अनुवाद का आयोजन भी हमारे प्रशिक्षण केंद्र में सम्पन्न हुआ। सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने इस समारोह में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

7. सरकारी महिला उच्च माध्यमिक विद्यालय तृप्पूणित्तुरा में प्रतियोगता का आयोजन ।

संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी के महत्व के प्रचार - प्रसार एवं उसके प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से सरकारी महिला उच्च माध्यमिक विद्यालय तृप्पूणित्तुरा, एर्णाकुलम के 10वीं कक्षा के छात्राओं को उनके विद्यालय में दो हिंदी प्रतियोगताएँ यथा वाचन एवं लेखन का आयोजन किया गया और विजेताओं का पुरस्कार वितरण हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में किया गया।

8. एम ए कॉलेज, कोतमंगलम के हिन्दी विभाग में 'राजभाषा' विषय पर कक्षा चलाया ।

दिनांक 09 जनवरी 2025 को सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन और इस क्षेत्र में उपलब्ध विविध रोजगार के अवसर एवं हिन्दी पढ़ने से उपलब्ध विभिन्न अवसरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सुबह 10 बजे से मध्याह्न 1 बजे तक एक सत्र का आयोजन एम ए कॉलेज, कोतमंगलम के हिन्दी विभाग में किया गया। इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों द्वारा राजभाषा के विभिन्न पहलुओं पर तथा राजभाषा के क्षेत्र में उपलब्ध रोज़गार के अवसरों की जानकारी प्रदान की गयी।

9. राजभाषा गृह पत्रिका 'पहचान' का वर्ष 2024-25 में दोनों अंकों का प्रकाशन (सितंबर 24/ मार्च25)

राजभाषा को समर्पित कंपनी की गृह पत्रिका 'पहचान' के दो अंकों में एक का सितंबर 2024 में और दूसरे का प्रकाशन मार्च 2025 में किया गया है। पत्रिका में कर्मचारियों की विविध रचनाएं/ कार्यालय में आयोजित विविध गतिविधियों की रिपोर्ट शामिल हैं। दोनों अंक को राजभाषा विभाग की वेबसाइट में अपलोड की गयी है।

10. 21 फरवरी 2025 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी 2025 को मनाया गया। इस अवसर पर मातृभाषा के महत्व और भारत की संस्कृति के अभिन्न तत्व के रूप में इसे बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इसके दौरान हमारी कंपनी में विभिन्न मातृभाषा के कर्मचारियों के लिए 'मेरी भाषा-मेरा गर्व' विषय पर निबंध प्रतियोगिता चलायी गयी। कर्मचारियों को अपनी-अपनी मातृभाषाओं में निबंध लिखने की सुविधा दी गई और हिंदी, मलयालम, मराठी और तमिल भाषाओं में कर्मचारियों ने निबंध लिखा।

11. दिनांक 10 जनवरी 2025 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया।

कंपनी द्वारा 10 जनवरी 2025 को विश्व हिन्दी दिवस श्री शंकरा कॉलेज कालड़ी के बीए/पीएचडी छात्रों के साथ मनाया गया। छात्रों को राजभाषा के संवैधानिक प्रावधान, हिन्दी की वाक्य संरचना, हिन्दी के महत्व और रोज़गार के अवसर आदि विषयों पर सत्रों का आयोजन किया गया। इसके साथ छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरण भी किया गया। इसके अलावा हमारी कंपनी में कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेताओं का पुरस्कार वितरण संयुक्त हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह में किया गया।

12. हिन्दी तकनीकी कार्यशाला 26.03.2025 को सम्पन्न।

तकनीकी क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन की अद्यतन जानकारी प्रदान करने और राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड, अंबलमुगल, कोच्चि के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के लिए 26 मार्च 2025 को 'राजभाषा तकनीकी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। संकाय सदस्य श्री किरण अय्यर, हिन्दी अनुवाद अधिकारी, सीमाशुल्क विभाग, कोच्चि ने कक्षा का संचालन किया।

13. प्रायोगिक कम्प्यूटर प्रशिक्षण - 21.09.2024 & 11-13 मार्च 2025

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने और कंप्यूटर में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन देने के लिए 21.09.2024 को और 11 से 13 मार्च 2025 तक चार प्रायोगिक कंप्यूटर प्रशिक्षण दिया गया। इनमें 24 अधिकारियों और कर्मचारियों को कंप्यूटर प्रशिक्षण दिया गया।

14. राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन

संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए हमारी कंपनी के मुख्य प्रबंधक /माह प्रबंधक / विभागाध्यक्षों के लिए 13 जून 2024 को राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका संचालन भारतीय रिजर्व बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक डॉ मधूशील आयिलत ने किया और उन्होंने प्रतिभागियों की राजभाषा संबंधी शंकाओं का निवारण किया एवं राजभाषा पर अद्यतन तकनीकी प्रगति की जानकारी भी दी।

15. नगर की विभिन्न राजभाषा संगोष्ठी/कार्यशाला में भागीदारी।

नगर स्थित विविध कार्यालयों यथा पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन (10/05/2024), कोको एवं काजू निदेशालय (25/06/2024) कोचीन शिपयार्ड (22/11/2024), एचपीसीएल(18/02/2025),एफ़एसीटी(19/2/2025) द्वारा आयोजित द्वारा राजभाषा संगोष्ठी / कार्यशालाओं में हमारी कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

16. केन्द्रीय अनुवाद ब्युरो द्वारा पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्रीय अनुवाद ब्युरो, नई दिल्ली द्वारा 08 से 12 जुलाई 2024 तक नई दिल्ली में आयोजित पाँच दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमारी कंपनी के मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन/ राजभाषा) ने भाग लिया।

17. राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम

श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रादेसशिक केंद्र, तिरूर में दिनांक 06.02.2025 को राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ मूसा ने कार्यक्रम उदघाटन किया। डॉ. सजिला एन.आर., एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी ने सभा में उपस्थित संकाय सदस्यों, अध्यापक गण एवं छात्रों का स्वागत किया। श्री पी.के. पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबन्धक (सेवानिवृत्त), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि., कोयंबत्तूर ने राजभाषा हिन्दी की संरचनात्मक पक्ष पर विस्तार से छात्रों को अवगत कराया, जो छात्रों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक साबित हुआ। श्री के.के. रामचंद्रन, उप निदेशक (रा.भा.) (सेवानिवृत्त), आयकर विभाग, कोच्चि ने राजभाषा के विभिन्न पहलुओं, सामान्य जानकारी एवं हिन्दी के प्रयोग संबंधी नई प्रौद्योगिकी की अद्यतन जानकारी आदि विभिन्न विषयों को समाहित करके प्रश्नोत्तरी के माध्यम से एक ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन किया।

18. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देने के लिए हमारी कंपनी में प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। समय-समय पर प्रशिक्षण देने से वे अपना कार्य हिन्दी में आसानी से कर सकते है। इस सिलसिले में हमारी कंपनी में 13/06/2024, 23/08/2024, 19/12/2024 और 26/03/2025 को चार हिन्दी कार्यशालों का आयोजन किया गया। सभी कार्मिकों को राजभाषा नीति की जानकारी एवं प्रायोगिक प्रशिक्षान भी दिए गए। इन कार्यशालाओं 60 अधिकारियों और 12 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

19. विशेष हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संघ की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देने तथा कार्यान्वयन में प्रत्येक विभाग की भूमिका से अवगत कराने और संसदीय राजभाषा समिति की नई प्रश्नावली से परिचित कराने के लिए दिनांक 13.11.2024 को आयोजित राजभाषा की बैठक में हमारी इकाई के सभी विभागों के लिए विशेष हिंदी कार्यशालाएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। इसके अनुपालनार्थ सभी विभागों/अनुभागों के अनुसचिवीय/ प्रशासनिक कार्मिकों के लिए सात विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। दिनांक 19/12/24, 14/2/25, 21/02/25, 24/02/25, 20/03/25, 21/03/25 और 25/03/25 को कुल सात विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

20. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करने एवं हिन्दी के प्रयोग को सुगम बनाने के लिए सुझाव देने के लिए गठित विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कुल चार बैठकों का आयोजन यथा 08.05.2024, 14.08.2024, 13.11.2024 और 19.02.2025 को आयोजित की गयी। इन बैठकों में कंपनी में राजभाषा के प्रयोग बढ़ाने के लिए विविध उपायों पर चर्चा की गयी और आयोजित विविध गतिविधियों की समीक्षा भी की गयी।

21. मूल रूप से हिंदी में काम करने के लिए नकद पुरस्कार योजना

मूल रूप से हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन योजना हमारी कंपनी में वर्ष 1994 से लागू है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रतिवर्ष उनके द्वारा हिन्दी में किए गए काम के आधार पर नकद पुरस्कार दिए जाते है। प्रतिवर्ष जनवरी से दिसम्बर तक की अवधि में हिन्दी में कम से कम 2000 शब्द लिखने वाले कर्मचारी नकद पुरस्कार के लिए पात्र हैं। वर्ष 2024 में कुल 15 कर्मचारियों ने इस योजना में भाग लेकर नकद पुरस्कार प्राप्त किया।

22. आज का शब्द

सरकारी कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरल शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करने पर ज़ोर दिया जाता है। हमारी इकाई के विभिन्न विभागों द्वारा कार्यालयीन कार्यों में प्रयुक्त होने वाली तकनीकी एवं प्रशासनिक हिन्दी शब्दावली से परिचित कराने के उद्देशय से प्रत्येक कार्यदिवस बार-बार प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी तथा हिन्दी के समानार्थक शब्दों को ईमेल द्वारा सभी को प्रदान किया जाता है। इसमें विशेष दिन की सूचना भी हिन्दी में दी जाती है। कंपनी के राजभाषा अनुभाग द्वारा 'आज का शब्द' भी भेजा जाता है।

23. अनुभाग/विभागवार राजभाषा निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन में हो रही कठिनाइयों एवं शंकाएं दूर करने तथा कार्यान्वयन सुगम बनाने में मदद करने एवं कार्यान्वयन में हुई प्रगति का जायजा लेने के लिए समय-समय पर विभिन्न अनुभागों और विभागों का निरीक्षण किया जाता है। कंपनी के प्रत्येक विभाग/अनुभाग का राजभाषा संबंधी निरीक्षण 14 से 26 मार्च 2025 तक किया गया। संबंधित विभागों/अनुभागों में उपलब्ध फाइलों और रजिस्टरों में हिन्दी के प्रयोग, कंप्यूटर में युनिकोड की सुविधा, ईमेल द्वारा हिन्दी पत्राचार, धारा 3(3) एवं नियम 11 का अनुपालन आदि की स्थिति की जांच की गयी और आवश्यक सुझाव दिए गए। राजभाषा कार्यान्वयन अधिक कारगर बनाने के लिए आवश्यक सुझाव भी दिए गए।

24. हिंदी पुस्तकों की खरीदी

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हमारी कंपनी में प्रतिवर्ष हिन्दी पुस्तकों की खरीदी की जाती है। खरीदी की जानेवाली स्तरीय पुस्तकों में वैज्ञानिक, शब्दावली और संदर्भ ग्रंथ भी शामिल है। इसके अतिरिक्त यात्रा विवरण, आत्मकथा, कविता, उपन्यास,नाट क और समसामयिक विषयों की पुस्तकों की खरीदी जाती है। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'भारत 2024' की खरीदी गयी।

25. विविध दिन/दिवस समारोह के अवसर पर हिन्दी का प्रयोग

हमारी कंपनी में मंत्रालय के निदेशानुसार आयोजित विविध दिवस समारोह या विभिन्न गतिविधियों के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाता है। चाहे यह स्वच्छ भारत अभियान हो या सतर्कता जागरूकता सप्ताह या अन्य कोई समारोह हो, में हिन्दी का प्रयोग बैनर, पीपीटी या ब्रेशर में सुनिश्चित किया जाता है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता
कवयित्री गगन गिल

संदीप
मुख्य प्रबन्धक, फायर एंड सेफ़्टी

वर्ष 2024 का साहित्य अकादमी पुरस्कार हिन्दी साहित्य के कवयित्री गगन गिल को दिया गया। यह पुरस्कार उनके कविता संग्रह 'मैं जब तक आई बाहर' के लिए दिया गया है। इसके पहले उन्हें भरत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, संस्कृति सम्मान, केदार सम्मान और हिन्दी आकदेमी साहित्यकार सम्मान से नवाजा जा चुका है। करीब पैंतीस वर्ष की अपनी सृजन यात्रा में आपकी नौ कृतियाँ अब तक प्रकाशित हो चुकी है। आपका पहला काव्य संग्रह है 'एक दिन लौटेगी लड़की'। इसके बाद वर्ष 2018 में प्रकाशित 'देह की मुँडेर पर' तक की अपनी काव्य यात्रा ने एक प्रतिष्ठित कवयित्री के रूप में हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अपना नाम जोड़ दिया है। उच्च शिक्षा के बाद आपने टाइम्स ऑफ इंडिया समूह में संपादक के रूप में कैरियर शूरू किया। साथ ही आप काव्य रचनाएं और अनुवाद कार्य भी करती थी। आप देश -विदेश में आयोजित विविध साहित्य एवं काव्य उत्सव में आमंत्रित कवयित्री भी रही।

आपकी कविताओं में स्त्रीस्वर मुखरित है। नारीवादी संवेदनशीलता से युक्त उनकी कविता में परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य पायी जाती है। वे स्त्री मन की पीड़ा को अपनी कविताओं के माध्यम से अच्छी तरह अभिव्यक्त करती है। संयमित तरीके से लिखी गयी उनकी कविताएं अपने समय की नारी से संबंधित विविध विषयों को प्रस्तुत करती है। कवयित्री गगन गिल हिन्दी साहित्य के प्रख्यात रचनाकार निर्मल वर्मा की पत्नी है। यह पुरस्कार केवल उनके लिए नहीं बल्कि हिन्दी साहित्य के रचनाकार के लिए सम्मान एवं प्रोत्साहन है। हम आशा करते हैं कि आगे भी उनकी सशक्त रचनाएं हिन्दी साहित्य के लिए अमूल्य रचना बन जाए।

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता
कवि के जयकुमार

चिंचू अशोकन
अ. कार्यालय सहायक

वर्ष 2024 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मलयालम साहित्य के कवि के जयकुमार को दिया गया। यह पुरस्कार उनके कविता संग्रह 'पिंगलाकेशिनी' के लिए घोषित किया है। लोकप्रिय गीतकार जयकुमार ने लगभग सौ मलयालम फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं, जिनमें कई सुपर हिट गाने भी शामिल हैं और उन्हें इससे पहले समग्र योगदान के लिए केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार और प्रतिष्ठित आशान कविता पुरस्कार से सम्मानित हो चुका है। आपने भारतीय प्रशासनिक सेवा में अपना कैरियर में शुरू किया और राज्य के मुख्य सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी पहचान अनुवादक, चित्रकार और पटकथा लेखक के रूप में भी मलयालम साहित्य क्षेत्र में हुई है। आप तिस्र में स्थित मलयालम विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति रहे थे और वर्तमान में केरल में प्रबंधन संस्थान के प्रबंध निदेशक हैं। पुरस्कार घोषणा के बाद श्री जयकुमार ने कहा कि 'एक कवि के रूप में अपने लिए यह पुरस्कार एक बड़ी स्वीकृति हैं और यह लेखक के लिए बहुत ज़िम्मेदारी लेकर आते हैं।'

उनकी पुरस्कार प्राप्त रचना 'पिंगलाकेशिनी', आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों के पतन और मानवता के बूनियादी मूल्यों को संरक्षित करने में मानवता के सामने आने वाली चुनौतियों पर केंद्रित है। अपनी काव्य प्रतिभा और दार्शनिक गहराई के लिए, 'पिंगलाकेशिनी' को मलयालम साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। मलयालम सिनेमा के असाधारण प्रतिभाशाली गीतकार होने के अलावा, जयकुमार को रवींद्रनाथ टैगोर और खलील जिब्रन की रचनाओं के शानदार अनुवाद के लिए व्यापक प्रशंसा मिली। उन्होंने एक बाल फिल्म लिखी और निर्देशित की है तथा मलयालम में पच्चीस और अंग्रेजी में चार पुस्तकें लिखी हैं। उनकी चित्रकला के बारे में कहे तो जहाँ कविता नहीं पहुँच पाती वहाँ अपनी अभिव्यक्ति के लिए चित्रकला एक माध्यम है। हम आशा करते हैं कि उनके बहुआयामी जीवन से केरल के सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र और समृद्ध बने रहे, एक गीतकार एवं निर्देशक के रूप में आप मलयालम फिल्म क्षेत्र में सक्रिय रहे। मलयालम के प्रतिभाधन रचनाकार को शुभकामनाएं।

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024-25 का उद्घाटन समारोह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रत्येक शहर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच है। इस मंच का उद्देश्य राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसको बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करना है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रतिवर्ष दो बैठकों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त राजभाषा के प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करने और अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष राजभाषा समारोह/संगोष्ठी आयोजित की जाती है। समिति द्वारा अपने सदस्य कार्यालयों के लिए संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह, संयुक्त हिन्दी कार्यशालाओं, राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम आदि का आयोजन भी किया जाता है।

इस कड़ी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोची के तत्वावधान में वर्ष 2024-25 के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह दिनांक 05 से 19 फरवरी

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (एचआर-राजभाषा)

तक मनाया गया। इसका उदघाटन 05.02.2025 को हमारी कंपनी/एचओसीएल में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उदघाटन एचओसीएल के निदेशक (वित्त) श्री योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला ने किया। अपने भाषण में उन्होने राजभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व और सबको जोडनेवाली भाषा और महा शक्ति के रूप में उभर रही भारत की भाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकार्यता पर बात की। आपने नराकास(पीएसयू),कोची द्वारा आयोजित गतिविधियों की सराहना की और क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार हासिल करने के लिए बधाई दी। श्री एम जे जगदीश, कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

ने समारोह की अध्यक्षता की। आपने राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार में नराकास (पीएसयू),कोची की विशेष भूमिका का उल्लेख किया। श्री बी बालचन्द्रन, मुख्य महा प्रबन्धक (सामग्री/एमएसएस/ मानव संसाधन) ने अपने आशीर्वचन में राजभाषा हिन्दी को प्यार की भाषा कहते हुए सभी से अनुरोध किया कि अपने दैनिक कामकाज में हिन्दी का अधिक प्रयोग करें। किया। श्रीमती एम सी शीला, सदस्य सचिव, नराकास (पीएसयू), कोची ने उद्घाटन कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए एचओसीएल के प्रति आभार व्यक्त किया। आपने संयुक्त हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए सभी सदस्य कार्यालयों के सहयोग एवं प्रोत्साहन पर आभार प्रकट किया। श्री अभिलाष आर,मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन) ने राजभाषा की आवश्यकता और हिन्दी के विकास पर अपना विचार सांझा किया। श्री रमेश ओ, मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया और श्री अरुण एम वी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने शुक्रिया अदा की । उदघाटन सत्र के बाद तीन प्रतियोगिताओं यथा सुलेख, प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पणी और अनुवाद का आयोजन किया गया।

वर्ष 2024-25 के संयुक्त हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर विविध कंपनियों एवं कार्यालयों में कर्मचारियों के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :- कविता रचना, निबंध रचना, कविता पाठ, सुगम संगीत (पुरुष और महिलाएं), प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी आदि। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति की नई प्रश्नावली पर सदस्य कार्यालयों के हिन्दी कर्मियों एवं समन्वयकों के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन बीएसएनएल सीएनटीएक्स में 07.02.2025 को चलायी गयी। छोटे सदस्य कार्यालयों के लिए संयुक्त हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी, एचपीसीएल, कोची में कर्मचारियों के लिए राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम, बीएसएनएल भवन में तकनीकी कार्यशाला और एफएसीटी में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। समापन समारोह और विजेताओं का पुरस्कार वितरण बीपीसीएल कोची रिफाइनरी के टाउनशिप में किया जाएगा। इस अवसर पर वर्ष 2023-24 के लिए विविध श्रेणियों में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सदस्य कार्यालयों को ट्रॉफी और प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे।

समानांतर सिनेमा का अग्रदूत - श्याम बेनेगल

षीबा वी.एम.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

सिनेमा समाज का दर्पण होता है। अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषयों का प्रतिपादन सिनेमा में होता है। सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है। सिनेमा सामाजिक परिवर्तन का साधन भी है। अगर इस दृष्टि से देखा जाए तो श्याम बेनेगल का फिल्म इसका नमूना है। श्याम बेनेगल ने भारतीय सिनेमा को पुनः परिभाषित किया। बचपन से उन्हें फिल्म में रुचि थी। 12वीं वर्ष के उम्र में पहला लघु फिल्म बनाया। हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री लेने के बाद वे विज्ञापन फिल्म के निर्माण से जुड़े रहे। लेकिन अपने अंदर के कलाकार ने वर्ष 1973 में अपनी पहली फिल्म 'अंकुर' बनायी। इसमें आपने समाज में मौजूद आर्थिक एवं यौन शोषण का चित्रण किया। इसके बाद बनाई फिल्म 'निशांत' में समाज के अन्याय को चित्रित किया गया था। वर्ष 1977 में 'मंथन' फिल्म के माध्यम से गुजरात के हाशिए पर पड़े लोगों को आवाज़ देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। मंथन फिल्म का निर्माण भी ऐतिहासिक रहा। पाँच लाख किसानों से दो -दो रुपये एकत्रित कर आपने इसका निर्माण किया था। आपने महिलाओं को मुख्य भूमिका प्रदान कर अनेक सुंदर एवं सशक्त फिल्में बनायी। 'भूमिका' आपका सर्वश्रेष्ठ फिल्म है। इसमें एक स्त्री के जीवन को उनके संघर्ष, उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं के साथ चित्रित किया है। इस फिल्म में उस समय के भारतीय यथार्थ को अपनी दृष्टि से उजागर करने का प्रयास श्याम बेनेगल ने किया। इसके बाद, वर्ष 1990 में इन्होंने मुस्लिम महिलाओं के जीवन की सच्चाई को, उनके संघर्ष को बारीकी से पेश की है। मम्मो, सरदारी बेगम और जुबैदा जैसी फिल्मों में मुस्लिम समुदाय के महिलाओं को केंद्र में रखकर उनका सूक्ष्म चित्रण किया गया। अपनी फिल्म के माध्यम से समाज में बदलाव लाना या समाज में जागरूकता पैदा करना आपका लक्ष्य रहा। समाज के ज्वलंत विषयों पर जगरूकता बढ़ाने और अल्पसंख्यकों और वंचित समुदायों के जीवन स्तर ऊंचा करने का प्रयास इसमें है। उनके फिल्में मनोरंजन एवं तमाशा केंद्रित न होकर सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत बने है। इसीलिए ये हिन्दी सिनेमा के क्लासिक्कल फिल्म माना जाता है।

श्याम बेनेगल भारत के एकमात्र फिल्म निर्देशक हैं जिन्हें सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फीचर फिल्म के लिए पाँच बार राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। श्याम बेनेगल की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी, अमरीश पुरी, अनंत नाग, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल और सिनेमेटोग्राफर गोविंद निहलानी जैसे बेहतरीन कलाकार दिए हैं। आपने भारतीय टेलीविजन को नया आकार प्रदान करने में बड़ी भूमिका निभाई है। आपके धारावाहिक निर्देशन में सर्वश्रेष्ठ है 'भारत एक खोज'। भारत के अतीत को सहजता और ईमानदारी से 53 एपिसोड में प्रस्तुत यह धारावाहिक टेलिविज़न के इतिहास में एक मील का पत्थर स्थापित हुआ। आपके खाते में कुल 24 फ़िल्में, 45 डॉक्यूमेंट्री और 15 विज्ञापन फ़िल्में हैं। फिल्म क्षेत्र में आपके मूल्यवान योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा 1976 में पद्म श्री और 1991 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त फिल्म क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार दादा साहब फाल्के पुरस्कार वर्ष 2005 में आपको दिए गए। कला के क्षेत्र में आपके बहुमूल्य योगदान के लिए आप को वर्ष 2006 से 2012 तक राज्यसभा के सदस्य के रूप में मनोनीत किया। कहानी कहने की आपकी बेजोड़ कला का गहरा प्रभाव भारतीय सिनेमा पर पड़ा। एक बार कहा था 'आपका हर सामाजिक कार्य एक राजनीतिक कार्य भी है'। आपका फिल्म इसका गवाह है। आपने फिल्म जैसे सशक्त माध्यम का उपयोग इन सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों को आलोचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया है। समानांतर सिनेमा की दुनिया में अग्रणी आपकी विरासत हमेशा बनी रहेगी।

अलविदा

सूरज आई.एस.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

वर्ष 2024 में अनेक हस्तियों ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। इनमें विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व शामिल है। वे कला, संगीत, उद्योग, साहित्य, राजनीति, अभिनेता आदि विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गज रहे और अपने क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। जो विरासत उनकी यहाँ बनी है, वह प्रेरणादायक एवं प्रोत्साहन देनेवाली है। उनके जाने से एक ऐसा खालीपन हमें महसूस होता है कि जिसे कभी नहीं भरा जा सकता। उनकी याद हमेशा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित और शिक्षित करेगा। इनमें से कुछ हस्तियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिए गए है:

रतन टाटा

टाटा के बिना भारतीयों का एक दिन भी नहीं चलता है। टाटा सर्वव्यापी हैं। नमक से लेकर कपूर तक हर उत्पादों में टाटा है। चाहे गाड़ी हो, हवाई जहाज हो, चाय हो, चाहे मनोरंजन हो या सॉफ्टवेयर कंपनी या ऑनलाइन कंपनी हो या फैशन वस्त्र हो, टाटा ही टाटा। जितना सम्मान टाटा समूह को मिला है उतना अन्य किसी कंपनी को भारत में नहीं मिला है। उन्होंने लोगों की आवश्यकताओं को समझने के लिए भारतीय बाज़ार की नब्ज़ को महसूस किया। उसी के अनुसार अपने कारोबार को विकसित किया जो भारत में सीमित नहीं विदेश में भी फैला हुआ है। टाटा को घर-घर में मशहूर ब्रंड बनाने के अलावा, रतन टाटा को उनके परोपकारी स्वभाव के लिए भारतीयों का बहुत सम्मान था। उनके संस्था सबसे बड़े धर्मार्थ संस्थाओं में एक है। वे सामाजिक जिम्मेदारी और स्थिरता के लिए गहराई से प्रतिबद्ध थे। वे सरल जीवन और उच्च विचार के थे। रतन टाटा के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।

ज़ाकिर हुसैन

उस्ताद जाकिर हुसैन, भारत के सभी समय के सबसे पसंदीदा संगीतकारों में से एक थे। वह केवल एक संगीतकार ही नहीं थे; वह एक सांस्कृतिक राजदूत थे जिनकी कलात्मकता महाद्वीपों के पार गूंजती थी। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें ऑल स्टार ग्लोबल कॉन्सर्ट में भाग लेने के लिए व्हाइट हाउस में आमंत्रित किया था। पारंपरिक रूप से एक सहायक वाद्य के रूप में देखे जाने वाले तबला

को इस प्रतिभाशाली वादक ने प्रदर्शनों में केंद्रीय भूमिका में लाया और वैश्विक मंच पर ला दिया। भारत के सर्वश्रेष्ठ तीनों पुरस्कार पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित इस अतुल्य कलाकार ने विश्व पर अपनी प्रतिभा दिखाई है। विख्यात ग्रॅमी पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुए।

यामिनी कृष्णमूर्ती

भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना क्षेत्र में डॉ यामिनी कृष्णमूर्ती का नाम अमर है। दशकों तक भारतीय शास्त्रीय नृत्यों को देश-विदेश में प्रचलित करने और विकसित करने में उनकी बड़ी भूमिका रही। भरतनाट्यम और कुचिपुडी में वे अग्रणी रही। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित किया। आपकी आत्मकथा 'ए पैशन फॉर डांस' वर्ष 1995 में प्रकाशित हुई। आपने दिल्ली में यामिनी स्कूल ऑफ डांस की स्थापना की।

रामोजी राव

रामोजी फिल्म सिटी के संस्थापक और मीडिया मालिक रामोजी राव अपने अथक परिश्रम से जाने माने उद्योगपति बने। आपको ईटीवी न्यूज़ चैनल शुरू करने और भारत में मीडिया और मनोरंजन के परिदृश्य को बदलने के लिए जाना जाता है। पत्रकारिता, साहित्य और शिक्षा में योगदान के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। रामोजी फिल्म सिटी फिल्म सुविधा प्रदान करनेवाले भारत के सबसे बड़ा केंद्र है। इसको देखने के लिए प्रति दिन करीब एक लाख पर्यटक आते हैं। हैदरबाद का सैर रामोजी फिल्म सिटी के बिना अधूरा है। ई नाडू नेटवर्क एवं ईनाडु अखबार भी इसके अधीन है। अपनी विरासत के लिए उन्हें हमेशा याद रखेगी।

पंकज उधास

पंकज उधास विख्यात गजल और पार्श्व गायक है। हिन्दी सिनेमा और भारतीय संगीत के क्षेत्र में सबसे अधिक चर्चित गायक है। वे दशकों तक टूटे दिलों को सुकून देने वाली आवाज़ के धनी थे। पंकज उधास ने अपनी ग़ज़लों से भारत और उसके बाहर कई पीढ़ियों को प्रभावित किया। उधास ने साथी संगीतकारों जगजीत सिंह और तलत अज़ीज़ के साथ मिलकर पूरे भारत में ग़ज़ल संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सात साल की उम्र में आपने गाना शुरू किया। फ़िल्म 'नाम' (1986) के अपने गीत 'चिट्ठी आई है' से उन्हें एक पेशेवर गायक के रूप में पहचान मिली। भारत सरकार ने पंकज उधास को पद्मभूषण से सम्मानित किया।

उस्ताद राशिद खान

उस्ताद राशिद खान शास्त्रीय संगीत की दुनिया में अपनी छाप छोड़ने वाले गायक रहे थे। वे कई व्यावसायिक हिट के पीछे की आवाज़ बनने तक, भारतीय संगीत के दो समानांतरों को एक साथ जोड़ने वाले गायक रहे थे। 'याद पिया की आए' - जिसे कभी उस्ताद बड़े गुलाम अली खान ने गाया था - राशिद के संगीत समारोह में सबसे ज़्यादा अनुरोध किए जाने वाले संगीत में से एक था। राशिद खान ने शुद्ध हिंदुस्तानी संगीत को सुगम संगीत शैलियों के साथ मिलाने का प्रयास भी किया

डॉ प्रभा अत्रे

प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका और पद्म विभूषण से सम्मानित डॉ. प्रभा अत्रे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के किराना घराने की मशाल वाहक थी। भारत सरकार द्वारा तीनों पद्म पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया था। अत्रे अपने बहुमुखी व्यक्तित्व के लिए जानी जाती थीं। शास्त्रीय गायिका होने के अलावा, उन्होंने एक शिक्षाविद, शोधकर्ता, संगीतकार के रूप में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। आपको ख्याल, ठुमरी, दादरा, गजल, गीत नाट्यसंगीत और भजन में महारत हासिल थी। म्यूजिक काम्पज़िशन पर लिखी गयी आपकी किताबें 'स्वरागिनी, स्वरारांगी और स्वरंजिनी संगीत के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है। प्रभा अत्रे बीसवीं सदी की सबसे उम्दा कलाकारों में से एक है। वे शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में हमेशा नए प्रयोग के लिए जानी जाती थी। इस दुनिया से उनकी अलविदा संगीत प्रेमियों के लिए बड़ी नुकसान है। लेकिन उनकी मधुर आवाज़ संगीत प्रेमी कभी भूला नहीं पाएंगे।

वर्ष 2024 में खेल जगत में भारत

अय्यूब
कनिष्ठ सहायक

वर्ष 2024 में भारत ने खेल जगत में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की। इससे स्पष्ट होता है कि भारत आगे बढ़ रही है। अक्सर यह कहा जाता है कि दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले राष्ट्र खेल जगत में सबसे पीछे रह जाता है। यह इस क्षेत्र में अव्वल दुनिया के छोटे राज्यों की तुलना करते समय सही प्रतीत होता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में भारत इस क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रही है। खेलकूद ऐसा क्षेत्र जहाँ हमेशा हार और जीत होती रहती है। लेकिन प्रतिभागिता की दृष्टि से देखा जाए तो स्थिति आशावह लगती है। असल में केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए 'खेलो इंडिया' पहल इसकी प्रगति के लिए एक कारण है। खेलकूद में उत्कृष्ठता बनाए रखने के लिए प्रशिक्षण देना, विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करना, खिलाड़ियों को सही अवसर देना एवं आवशयक स्टाइपेन्ड मुहैया करना इसका मकसद रहा। इसके लिए सरकार का प्रयास उल्लेखनीय है। खेल माहौल में काफी परिवर्तन देखा जा सकता है। सरकार कीर्ति एवं रीसेट कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभाओं की पहचान की जा रही है एवं कौशल प्रदान किये जा रहे हैं।

वर्ष 2024 भारत के लिए एक यादगार वर्ष रहा है। भारत ने वैश्विक मंच पर अभूतपूर्वक सफलता प्राप्त की है।

भारत ने दूसरी बार आईसीसी पुरुष टी 20 विश्वकप दक्षिण अफ्रीका को हराकर जीता। दक्षिण अफ्रीका के बारबाडोस में इस फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 7 रनों को हराकर जीत हासिल की।

भारतीय हॉकी टीम ने एशियन चैम्पीयनशिप ट्रॉफी जीत ली। फाइनल में चीन को हराकर भारत ने इस खिताब जीता।

भारत ने वर्ष 2024 में पेरिस ओलिंपिक खेलों में 1 रजत और 5 कांस्य सहित 6 पदकों की शानदार जीत की।

45वें फिडे शतरंज ओलंपियाड में भारतीय पुरुष और महिला शतरंज टीमों ने स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

डी. गुकेश ने सिंगापुर में विश्व शतरंज चैंपियनशिप में चीन के डिंग लिरेन को हराकर 2024 में सबसे कम उम्र के विश्व शतरंज चैंपियन के रूप में भी इतिहास रच दिया।

इसी वर्ष में पेरिस पैरालिंपिक खेलों में भारत के एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य सहित 29 पदक जीते और पदक तालिका में 18वां स्थान हासिल किया। यह पैरालंपिक के इतिहास में देश की अब तक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है।

आजकल खिलाड़ियों एवं टीमों को सरकार का पूर्ण समर्थन मिल रहा है। माननीय प्रधानमंत्री स्वयं विजेताओं से मुलाकात कर उनका अभिनंदन करते है। खिलाड़ियों पर इसका सकारात्मक असर पड़ जाता है। किसी भी व्यक्तिगत जीत को भी भारत के लिए गर्व का समझकर पूर्ण समर्थन एवं पुरस्कार घोषित किया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि खेल को सरकार किटन महत्व देता है। चाहे वह किसी पहल के माध्यम से हो या विदेशी उच्च प्रशिक्षण के ज़रिए हो कामयाब के लिए अवसर प्रदान करती है। आशा है आनेवाले वर्षों में भारत खेल जगत में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की जाएंगी।

भारत की शास्त्रीय भाषाएं

निधिन वी.वी.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

भाषा समाज का दर्पण है। किसी भी समाज की पहचान भाषा से होती है। उस समाज की संस्कृति का परिचय भाषा ही देती है। इसके अतिरिक्त उनके इतिहास, राजनीति और सामाजिक स्वरूप आदि का परिचय भाषा से मिलता है। भाषा की दृष्टि से भारत बहुत धनी है। यहाँ फिलहाल 22 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है और ये भाषाएं आठवीं अनुसूची में शामिल है। भारत सरकार इन 22 भाषाओं के विकास के लिए कार्य कर रही है। ये सभी भाषाएं भारत की पूंजी है और राष्ट्रभाषाएं हैं।

भारत में भाषा की परंपरा बहुत पुरानी है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से आधुनिक भारतीय आर्य भाषा तक की यात्रा भाषा की विकास यात्रा है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी तक की यात्रा साहित्य रचनाओं से समृद्ध और सम्पन्न भारत का स्वर्णिम इतिहास है। वैसे ही द्रविड भाषा परिवार में शामिल दक्षिण भारत की अधिकांश भाषाएं समृद्ध साहित्य से सम्पन्न थी। इन भाषाएँ भारत की समृद्ध परंपरा और संस्कृति का परिचायक होती है। इसलिए इनमें से कुछ भाषाओं को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा प्राप्त हुआ है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि

'हमारी सरकार भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति को महत्व देती है और उसका जश्न मनाती है। हम क्षेत्रीय भाषाओं को लोकप्रिय बनाने की अपनी प्रतिबद्धता पर भी अटूट रहे हैं। ये सभी भाषाएं सुंदर हैं और देश की जीवंत विविधता को रेखांकित करती हैं। ये भाषाएं अपनी साहित्यिक परंपराओं के लिए भी जानी जाती हैं। शास्त्रीय भाषाओं के रूप में इन्हें जो मान्यता दी गई है, यह भारतीय विचार, संस्कृति और इतिहास पर उनके कालातीत प्रभाव का सम्मान है।'

शास्त्रीय भाषाएं भारत की गहन और प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की संरक्षक के रूप में काम करती है। भारत सरकार इस समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के लिए

शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। शास्त्रीय भाषाएं स्वतंत्र परंपराओं और समृद्ध साहित्यिक इतिहास वाली प्राचीन भाषाएं हैं, जो विभिन्न साहित्यिक शैलियों और दार्शनिक ग्रंथों को प्रभावित करती हैं। इन भाषाओं का लिखित साहित्य का एक बड़ा और प्राचीन संग्रह होता है। शास्त्रीय भाषा का दर्ज देने पर विचार करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2004 में एक भाषा विशेषज्ञ समिति का गठन किया और शास्त्रीय भाषा के लिए एक मापदंड बनाया जो इस प्रकार है:

- इसकी प्रारंभिक ग्रंथों/अभिलिखित इतिहास की प्राचीनता 1,500-2,000 वर्ष की अवधि की होनी चाहिए।
- प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का संग्रह जिसे बोलने वालों की पीढ़ियों द्वारा एक मूल्यवान विरासत माना जाता हो,
- साहित्यिक परंपरा मूल होनी चाहिए और किसी अन्य भाषा समुदाय से उधार नहीं ली गई होनी चाहिए।
- उक्त भाषा और साहित्य अपने आधुनिक स्वरूप से अलग होना चाहिए; शास्त्रीय भाषा और उसके बाद के रूपों या उसकी शाखाओं के बीच एक असातत्य भी हो सकता है।

वर्ष 2004 में भारत सरकार ने सबसे पहले तमिल भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया। इसके बाद वर्ष 2005 में संस्कृत, वर्ष 2008 में कन्नड़ और तेलुगु, वर्ष 2013 में मलयालम और वर्ष 2014 में ऑडिया भाषा को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा दिया गया। इस प्रकार वर्ष 2024 तक भारत में शास्त्रीय भाषाओं की संख्या 6 रहीं थीं।

भारत सरकार ने अक्तूबर 2024 में पाँच भाषाओं यथा मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने की घोषणा की है। अब शास्त्रीय भाषाओं की संख्या बढ़कर ग्यारह (11) हो गईं। महाराष्ट्र राज्य की मराठी, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की भाषाओं में पाली और प्राकृत, असम राज्य की असमिया और पश्चिम बंगाल की बंगाली इनमें शामिल है। भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने से शैक्षणिक और शोध क्षेत्रों में रोज़गार के नए अवसर खुले जाएंगे। साथ ही भाषा विलुप्त होने से बच जाएगी और इन भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, दस्तावेज़ीकरण और डिजिटलीकरण कार्य होंगे। इन भाषाओं में उपलब्ध श्रेष्ठ रचनों का अनुवाद एवं प्रकाशन के लिए सहायता सरकार की तरफ से मिलेगी। इन भाषाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा और इनके विद्वानों को अध्ययन के लिए छात्रवृति और फेलोशिप मिलेंगे, इनके समग्र विकास के लिए उत्कृष्ट केंद्र खुले जाएंगे। इससे बढ़कर इन भाषाओं के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थानों में पर्यटन का अवसर भी खुले जाएंगे। यहाँ पाली भाषा का संबंध बौद्ध धर्म से है तो प्राकृत का संबंध जैन धर्म से है। भले ही इन भाषाओं का प्रयोग आजकल व्यापक रूप से नहीं है, लेकिन इन भाषाओं में उपलब्ध समृद्ध साहित्यिक परंपरा वर्तमान जीवन को उन्नत एवं उदात्त बनाने में मदद करेगी। आशा है कि शास्त्रीय भाषाओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हो और भारत की अन्य भाषाओं को भी शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हो। शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त भाषाओं के पाठकों को बधाई।

'शिक्षा मंत्रालय ने शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2020 में तीन केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। प्राचीन तमिल ग्रंथों के अनुवाद की सुविधा, शोध को बढ़ावा देने और विश्वविद्यालय के छात्रों और तमिल भाषा के विद्वानों के लिए पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान की स्थापना की गई थी। शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और संरक्षण को और बढ़ाने के लिए, मैसूर में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान के तत्वावधान में शास्त्रीय कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओडिया में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए गए। इन पहलों के अलावा, शास्त्रीय भाषाओं के क्षेत्र में उपलब्धियों को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित किए गए हैं।'

बजट शब्दावली

नीतु एस.
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

ALLOCATION	आबंटन
ANNUAL FINANCIAL STATEMENT	वार्षिक वित्तीय विवरण
APPROPRIATION BILL	विनियोजन बिल
ASSESSMENT	निर्धारण
ASSISTANCE	सहायता
BALANCE OF PAYMENTS	भुगतान संतुलन
BENEFICIARY	लाभार्थी
BONDS	बॉण्ड
BUDGET ESTIMATES / BUDGETARY DEFICIT	बजट अनुमान/ बजट घाटा
CAPITAL EXPENDITURE/ FUND	पूंजी व्यय / निधि
CAPITAL RECEIPT /GAINS	पूंजीगत प्राप्तियाँ / अभिलाभ
CAPITAL GOODS/PAYMENTS	पूंजी माल / भुगतान
CENTRAL ASSISTANCE	केन्द्रीय सहायता
CENTRAL PLAN OUTLAY	केन्द्रीय योजना परिव्यय
CESS	उपकर
CONSOLIDATED FUND	समेकित निधि
CONSUMER PRICE INDEX	उपभोक्ता सूचकांक
CONTINGENCY FUND	आकस्मिक निधि
CORPORATE TAX	कॉरपोरेट कर
CUMULATIVE GROWTH	संचयी वृद्धि
CURRENT ACCOUNT DEFICIT	चालू खाता घाटा
CUSTOM DUTY	सीमा शुल्क

DEBENTURES	डिबेन्चर
DEMAND FOR GRANTS	अनुदान की मांग
DIRECT TAX / EXCISE DUTY	प्रत्यक्ष कर / उत्पाद शुल्क
DISINVESTMENT	विनिवेश
ECONOMY /ECONOMIC POLICY	अर्थव्यवस्था / आर्थिक नीति
ESTIMATED COST	अनुमानित लागत
EXCESS GRANTS	अतिरिक्त अनुदान
EXTERNAL DEBT / INTERNAL DEBT	विदेशी कर्ज़ / आंतरिक कर्ज़
FAMILY PENSION	परिवार पेंशन
FINANCE BILL / FINANCIAL ASSISTANCE	वित्त विधेयक / वित्तीय सहायता
FISCAL DEFICIT/ POLICY/ SUPPORT	वित्तीय घाटा/नीति/समर्थन
FOREIGN DIRECT INVESTMENTS-FDI	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
FOREX	विदेशी मुद्रा
FRINGE BENEFIT TAX	अनुषंगी लाभ कर
GROSS DOMESTIC PRODUCT(GDP)	सकल देशी उत्पाद
GST	वस्तु एवं सेवाकर
INCENTIVE OUTLAY	प्रोत्साहन परिव्यय
INCOME TAX RETURN	आयकर विवरणी
INDIRECT TAXES	अप्रत्यक्ष कर
INFLATION	मुद्रास्फीति
INFRASTRUCTURE	अवसंरचना
INTEREST	ब्याज
INVESTMENT	निवेश
LIABILITY	देनदारी
LOANS AND ADVANCES	ऋण और अग्रिम
LONG TERM GAINS	दीर्घकालीन अभिलाभ
MINIMUM ALTERNATE TAX	न्यूनतम वैकल्पिक कर
MONETARY POLICY	मौद्रिक नीति
MUTUAL FUNDS	म्यूच्युअल फंड

NATIONAL DEBIT	राष्ट्रीय कर्ज़
NEW PENSION SCHEME (NPS)	नई पेंशन योजना
NON PLAN EXPENDITURE	गैर-योजना व्यय
NON-FINANCIAL ASSETS	गैर- व्यय आस्तियां
NON-TAX REVENUE	गैर कर राजस्व
OUTCOME BUDGET	परिणाम बजट
PER CAPITA INCOME	प्रति व्यक्ति आय
PLAN EXPENDITURE/ OUTLAY	योजना व्यय/परिव्यय
PRIMARY DEFICIT	प्राथमिक घाटा
PROVISION	प्रावधान
PUBLIC ACCOUNT/ EXPENDITURE	लोक लेखा / व्यय
RE-APPROPRIATION	पुनर्विनियोजन
REPAYMENT / RATE	चुकौती / दर
REVENUE BUDGET/ DEFICIT/ ESTIMATES	राजस्व बजट/घाटा/अनुमान
REVENUE RECEIPT/ SURPLUS	राजस्व प्राप्तियाँ /अधिशेष
REVISED EXPENDITURE/RECEIPT	संशोधित व्यय/ प्राप्ति
SCHEME	योजना
STAKEHOLDER	हितधारक
STANDARD DEDUCTION	मानक कटौती
SUBSIDIES	सहायिकी
SURCHARGE	अधिभार
TAX EXEMPTION / PAYER	कर छूट /करदाता
TDS	स्रोत पर काटा गया कर
TREASURY BILLS	राजकोष बिल
UNION BUDGET	केन्द्रीय बजट
VOTE ON ACCOUNT	लेखा अनुदान
WAYS AND MEANS ADVANCE	अर्थोपाय अग्रिम
WEALTH TAX	धन कर
WHOLESALE PRICE INDEX	थोक कीमत सूचकांक

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत उल्लिखित दस्तावेज़ों की सूची
LIST OF DOCUMENTS UNDER SECTION 3(3) OF OFFICIAL LANGUAGE ACT, 1963

क्रम सं. Sl.No.	दस्तावेज का नाम Name of the document
1.	संकल्प / Resolutions.
2.	साधारण आदेश / General Orders.
3.	नियम / Rules.
4.	अधिसूचनाएँ / Notifications.
5.	प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें Administrative & other Reports.
6.	प्रेस विज्ञप्तियाँ / Press Communiqués.
7.	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें। Administrative and other reports to be laid before a House or the Houses of Parliament.
8.	संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज़पत्र। Official papers to be laid before a House or the Houses of Parliament.
9.	संविदाएँ / Contracts.
10.	करार / Agreements.
11.	अनुज्ञप्तियाँ / Licenses.
12.	अनुज्ञापत्र / Permits.
13.	निविदा सूचनाएँ / Tender Notices.
14.	निविदा प्रारूप / Tender Forms.

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है-

(1) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों;

(2) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों;

(3) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

As per Section 3(3) of the Official Languages Act, 1963 the following are covered in general orders:-

(1) all orders, decisions or instructions intended for departmental use and which are of standing nature;

(2) all such orders, instructions, letters, Memoranda, Notices, etc. related to or intended for group or groups of Government employees;

(3) all circulars whether intended for departmental use or for Government employees.

-oOo-

कुमारी. निरुपमा सूरज
(श्री सूरज अई एस, वरिष्ठ अधिकारी (एच आर) की सुपुत्री)

प्रिया ज़क्करिया
(सहायक प्रबन्धक (सिस्टम्स/ सामग्री))

अंधेरे की कैद से उजाले की आज़ादी की ओर

सत्यमेव जयते

संसदीय राजभाषा समिति
Committee of Parliament on Official Language

गृह मंत्रालय
Ministry of Home Affairs

केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों/
स्वायत्त निकायों/बैंकों/उपक्रमों/संस्थानों आदि में हिंदी के प्रयोग से संबंधित

निरीक्षण प्रश्नावली
Inspection Questionnaire

Regarding use of Hindi in Ministries/Departments/Attached and
Subordinate Offices/Autonomous Bodies/Banks/Undertakings/Institutes etc.
of the Central Government

संसदीय राजभाषा समिति की संशोधित प्रश्नावली पर विभिन्न
विभागों के लिए आयोजित विशेष कार्यशाला की झलकियाँ

वर्ष 2025 के गणतंत्र दिवस के विविध दृश्य - झंडा फहराते हुए सीएमडी सजीव बी और विविध प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण करते हुए कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी गण

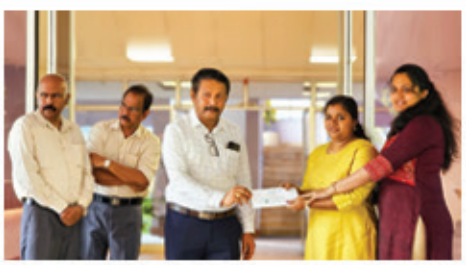

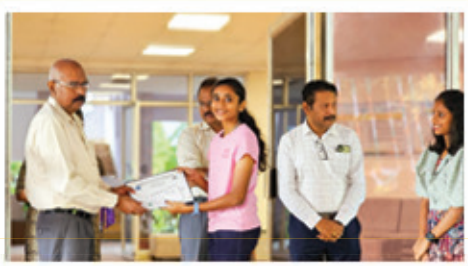

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

पंजीकृत/निगमित कार्यालय एवं फैक्टरी, अंबलमुगल - 682302, एरणाकुलम जिला, केरल, भारत

दूरभाष : 0484 - 2720911-13, 2720844, वेबः www.hoclindia.com, फेसबुकः fb.me/hoclindia, ट्विटरः twitter.com/organic_ltd